ज्ञान भारती
४

राजकीय प्रकाशन, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

ज्ञानभारती

भाग ४

(कक्षा ४ के विद्यार्थियों के लिए)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण १९९१

१९१३ शक

१९९१ ई.

मूल्य रु. 4-85

रचना मण्डल :

सम्पादक : श्री हरि प्रसाद पाण्डेय

संयोजक : श्री गौरीशंकर मिश्र

लेखक मण्डल : श्रीमती रजनी रैना
श्रीमती सुमिता धूलिया
श्री जगमोहन सिंह
डा. शोभनाथ त्रिपाठी
श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी, परिषद प्रतिनिधि

परामर्शी : श्री निरंजन कुमार सिंह

समीक्षक : श्री गंगादत्त शर्मा
डा. रामचरित मिश्र

चित्रांकन एवं उत्पादन :

डा. श्रीकृष्ण पाठक, पाठ्य पुस्तक अधिकारी
पाठ्य पुस्तक विभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

राजनियुक्त प्रकाशक एवं मुद्रक

सुलेख मुद्रणालय इलाहाबाद

प्राक्कथन

पाठ्य पुस्तकें शिक्षा का सर्वमान्य साधन और विद्यार्थी की प्रथम आवश्यकता हैं। इसीलिए इनको अद्यतन स्वरूप के साथ विकसित करना एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य है। छोटे बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री के विकास के संबंध में तो यह और भी अधिक सत्य है।

प्रस्तुत पुस्तक को छात्रों की अपेक्षाओं, मूल्यों तथा दस समान केन्द्रिक तत्वों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। जिससे छात्रों के व्यक्तित्व को बहुमुखी विकास का अवसर प्राप्त हो सके। राष्ट्रीय चेतना विश्व बन्धुत्व की भावना तथा सर्वधर्म समभाव से सम्बंधित सन्दर्भों को प्रस्तुत पुस्तक में यथोचित समायोजित किया गया है।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक अपने अभीष्ट को प्राप्त करने में सफल होगी तथा इसकी सहायता से बच्चों में अपेक्षि दक्षताओं, कौशलों तथा मूल्यों का विकास होगा।

पुस्तक का वर्तमान स्वरूप रचना मण्डल और विभागीय सहयोगियों के श्रम का फल है। पाठ्य सामग्री को अन्तिम स्वरूप प्रदान करने में डा. लक्ष्मी प्रसाद पाण्डेय शिक्षा निदेशक (बेसिक) एवं अध्यक्ष, बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश का बहुमूल्य योगदान रहा है। अतः उनके प्रति मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ।

शिक्षकों तथा विद्वतजनों के रचनात्मक सुझावों का स्वागत है।

मई १९८९

हरिप्रसाद पाण्डेय
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पाठ-सूची

पाठ - १

सुबह

सूरज की किरणें आती हैं,
सारी कलियाँ खिल जाती हैं।
अन्धकार सब खो जाता है,
सब जग सुन्दर हो जाता है।

चिड़ियाँ गाती हैं मिलजुल कर,
बहते हैं उनके मीठे स्वर।
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी,
चलती है जैसे मस्तानी।

यह प्रातः की सुख-बेला है,
धरती का सुख अलबेला है।
यही ताजगी, यही कहानी,
नया जोश पाते हैं प्राणी।

खो देते हैं आलस सारा,
और काम लगता है प्यारा।
सुबह भली लगती है उनको,
मेहनत प्यारी लगती जिनको।

मेहनत सबसे अच्छा गुण है,
आलस बहुत बड़ा दुर्गुण है।
अगर सुबह भी अलसा जाये,
तो क्या जग सुन्दर हो पाये!

श्री प्र

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

जग	=	संसार
प्रातः	=	सवेरा
अलबेला	=	अनोखा
अन्धकार	=	अँधेरा
सुहानी	=	अच्छी लगने वाली
दुर्गुण	=	बुराई
प्राणी	=	जीव-जन्तु

सोचो और बताओ

(१) सूर्य के निकलने पर क्या-क्या होता है ?

(२) प्रातः काल चिड़ियाँ क्या करती हैं ?

(३) सवेरे के समय लोगों को कैसा लगता है ?

(४) मेहनत सबसे अच्छा गुण क्यों है ?

(५) इस कविता द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

(६) कविता की उन पंक्तियों को पढ़ो जिनमें बताया गया है कि प्रातःकाल का प्राणियों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

भाषा कार्य

(१) 'आती' और 'जाती' ऐसे शब्द हैं जिनके अन्त की ध्वनियाँ मिलती हैं। इन्हें तुकान्त शब्द कहते हैं। नीचे दिये गये शब्दों के तुकान्त शब्द कविता से खोजकर लिखो-

सुहानी	कर	सारा	जाये
......	......	......	......

(२) इन पंक्तियों के अर्थ लिखो-

(क) अन्धकार सब खो जाता है

(ख) सुबह भली लगती है उनको
मेहनत प्यारी लगती जिनको

(ग) अगर सुबह भी अलसा जाये
तो क्या जग सुन्दर हो पाये !

अध्यापन संकेत

(१) छात्रों को यह कविता कंठस्थ कर कक्षा में सुनाने का निर्देश दें।

(२) सुबह के बारे में कोई अन्य कविता खोजकर कक्षा में सुनाने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।

पाठ-२

दो बैलों की कथा

झूरी के पास दो बैल थे - हीरा और मोती। दोनों में बहुत प्यार था। वे नाँद में एक साथ मुँह डालते और एक ही साथ हटाते। झूरी उनके चारे-पानी का बहुत ध्यान रखता था। वह कभी भूलकर भी उन्हें मारता-पीटता नहीं था। पशु भी प्यार का भूखा होता है। वे भी झूरी को बहुत चाहते थे।

झूरी की पत्नी का भाई - गया एक बार हीरा और मोती को कुछ दिन के लिए अपने गाँव ले जाने लगा। बैलों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उन्हें क्यों और कहाँ लिये जाता है। रास्ते में उन्होंने उसे बहुत तंग किया। मोती बायें भागता तो हीरा दायें। इस पर गया ने उन्हें बहुत पीटा। घर पहुँच कर उसने उनके सामने रूखा-सूखा

भूसा डाल दिया, पर उन्होंने उसे सूँघा तक नहीं।

रात होने पर दोनों बैलों ने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। उन्होंने जोर लगाकर रस्सियाँ तोड़ डालीं और भाग निकले। सुबह होने पर जब झूरी ने उन्हें थान पर खड़ा देखा तो वह सब कुछ समझ गया और प्यार से उन पर हाथ फेरने लगा। परन्तु झूरी की पत्नी उन्हें देखकर जल-भुन गयी। उसने उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया, फिर भी वे खुश थे।

अगले दिन गया फिर आया। इस बार वह उन्हें गाड़ी में जोतकर ले चला। रास्ते में मोती ने चाहा कि गाड़ी गड्ढे में ढकेल दे। पर हीरा समझदार था। उसने गाड़ी सँभाल ली। जैसे-तैसे गया घर पहुँचा।

अब गया ने उनसे बड़ा सख्त काम लेना शुरू किया। वह उन्हें दिन भर हल में जोतता। जब-तब उन्हें मारता-पीटता। शाम को घर लाकर मोटे-मोटे रस्सों से बाँधकर उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल देता। वे लाचार निगाहों से एक दूसरे को देखते रहते।

गया के घर में एक छोटी सी लड़की रहती थी। वह बैलों की दुर्दशा देखती तो उसे बुरा लगता। वह रात को चुपके से उन्हें रोटी खिलाती। दोनों बैल उसके प्यार के सामने अपनी मार और अपमान भूल जाते। एक दिन मोती रस्सी को चबाकर तोड़ने की कोशिश कर रहा था, वह लड़की आयी और उसने दोनों बैलों को खोल दिया। दोनों वहाँ से भाग निकले। थोड़ी देर बाद जब गया को पता चला तो वह भी उनके पीछे दौड़ा पर उन्हें पकड़ न सका।

अब हीरा और मोती आजाद थे।

रास्ते में उन्हें एक साँड़ मिला। वह उनकी ओर लपका तो हीरा-मोती के होश उड़ गये। भागना बेकार था इसलिए दोनों ने साहस से काम लिया। साँड़ ने आकर हीरा पर वार किया तो मोती ने उस पर पीछे से सींगों से चोट की। साँड़ घबराया। वह किसी एक को तो मारकर कचूमर निकाल देता, पर यहाँ दो थे। मिलकर काम करने में बल है। दोनों ने मिलकर साँड़ को भगा दिया। मोती कुछ दूर उसके पीछे दौड़ा, पर हीरा ने उसे दूर तक न जाने दिया।

दोनों अब बड़े प्रसन्न थे। आगे चले तो रास्ते में मटर का खेत दिखायी दिया। भूख तो लग ही रही थी। हरी-हरी मटर देखकर उनकी भूख और भी तेज हो गयी। वे खेत में घुस गये और लगे मटर खाने। अभी पेट भरा भी न था कि खेत के रखवालों ने उन्हें देख लिया। उन्होनें उन दोनों को चारों ओर से घेरकर पकड़ लिया और कांजी हौस में बन्द करवा दिया।

हीरा और मोती ने देखा कि कांजी हौस में और भी कई जानवर थे - भैंसें, घोड़े, घोड़ियाँ, गधे-सबके सब कमजोर और दुबले-पतले। वहाँ किसी के लिए न चारे का प्रबन्ध था न पानी का। 'यहाँ कहाँ आ फँसे' उन्होंने सोचा।

रात हुई। मोती ने हीरा से कहा कि अगर दीवार तोड़ दी जाय तो बाहर निकला जा सकता है। उसने सींगों से दीवार गिराने का प्रयत्न किया। दो-चार चोटों में ही थोड़ी सी दीवार गिर गयी। उसका उत्साह बढ़ा तो उसने और जोर से चोटें लगानी शुरू की।

दीवार में रास्ता बनते ही पहले तो घोड़ियाँ भागीं, फिर भैंसें और

अभ्यास कार्य

१ - पढो और समझो

नाँद	=	हौदी, जिसमें जानवरों को चारा-पानी दिया जाता है।
थान	=	स्थान जहाँ जानवरों को बाँधकर खिलाया जाता है।
सख्त	=	कठिन।
दुर्दशा	=	बुरी हालत।
साहस	=	हिम्मत।
कांजी हौस	=	सरकारी बाड़ा या मवेशीखाना जहाँ लावारि पशु मालिक द्वारा छुड़ाये जाने तक रखे जात हैं।
नीलाम करना	=	बोली लगाकर अधिक दाम देने वाले के हा बेचना।
जल-भुन जाना	=	अधिक नाराज होना।
होश उड़ना	=	भयभीत होना।

२- सोचो और बताओ

१- झूरी के दोनों बैलों के क्या नाम थे ?

२- गया कौन था ?

३- गया ने बैलों को रूखा-सूखा भूसा क्यों दिया ?

४- हीरा और मोती गया के घर से क्यों भाग गये ?

५- लड़की ने बैलों की क्या मदद की ?

६- साँड़ का सामना हीरा-मोती ने कैसे किया ?

७- हीरा और मोती अपने घर किस तरह वापस आये ?

३- भाषा कार्य

क- नीचे लिखे वाक्यों को कहानी के क्रम में लिखो ताकि यह मालूम हो सके कि क्या पहले हुआ और क्या बाद में।

- छोटी लड़की ने दोनों बैलों को खोल दिया।
- झूरी की पत्नी का भाई गया दोनों बैलों को अपने घर ले गया।
- दूसरी बार गया बैलों को गाड़ी में जोतकर ले गया।
- दोनों बैल रात में रस्सी तुड़ाकर घर भाग आये।
- मोती ने गधों को भी सींग मार कर भगा दिया।
- रखवालों ने उन दोनों को कांजी हौस में बन्द करवा दिया।
- व्यापारी ने दोनों बैलों को खरीद लिया।
- झूरी की पत्नी ने दोनों बैलों के माथे चूम लिये।
- झूरी के पास हीरा मोती नामक दो बैल थे।
- दोनों बैल व्यापारी के पास से भागकर घर आ गये।

ख- 'बैल वहाँ से भाग आये'। - इस वाक्य में यदि पूछा जाय कि कौन भाग आया ? तो उत्तर होगा - 'बैल, क्योंकि भागने का काम बैल ने किया है। वाक्य में काम करने वाला कर्ता कहलाता है। इस वाक्य में 'बैल' कर्ता है। इसी प्रकार नीचे के वाक्यों में कर्ता शब्द को ढूँढकर लिखो-

१- मोती बायें भागता तो हीरा दायें।

२- गया ने उन्हें बहुत पीटा।

३- उसने गाड़ी सँभाल ली।

४- हीरा नें उसे दूर तक न जाने दिया।

५- व्यापारी ने उन्हें खरीद लिया।

ग- वाक्य में प्रयोग करो -

जल भुन जाना। होश उड़ जाना।

जान बचाकर भाग जाना। आव देखा न ताव।

घ- नीचे शब्दों के जोड़े दिये गये हैं। इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करोः-

(१) मारता-पीटता, रूखा-सूखा, दुबले-पतले

(२) सहते-सहते, पीछे-पीछे, दौड़ी-दौड़ी

अध्यापन संकेत

१- 'मिलकर काम करने में बल है।' - इस आशय की बच्चों को कुछ और कहानियाँ सुनायी जायँ।

२- विभिन्न घटनाओं की ओर संकेत करते हुए बच्चों से पूछा जाय कि उससे उन्हें क्या सीख मिलती है।

चन्द्रशेखर आजाद

सन १९२१ की बात है। उस समय हमारा भारत अंग्रेजों के अधीन था। भारत की जनता गुलामी की जंजीर तोड़ डालने को बेचैन हो उठी थी। देश में चारों ओर क्रान्ति की आग भड़क रही थी। स्थान-स्थान पर अंग्रेजों के विरोध में जुलूस निकाले जा रहे थे। एक दिन वाराणसी में किशोर बालकों का एक छोटा सा जुलूस निकला। एक सोलह वर्षीय बालक उस जुलूस का नेतृत्व कर रहा था। उस बालक का नाम था चन्द्रशेखर।

तभी गलियों में जोशीले नारे गूँज उठे। 'भारत माता की जय', 'गांधी जी की जय' नारे लगाने वाले उस जुलूस में मुश्किल से दस-बारह बालक थे। उनकी उम्र भी बारह से सोलह वर्ष के बीच थी किन्तु उनके किशोर चेहरों पर निर्भीकता, साहस और उत्साह की छाप स्पष्ट थी। उमंग से भरे बालक हाथ में तिरंगा झंडा लिये आगे बढ़ते जा रहे थे।

जुलूस के नेता का मुख अद्भुत तेज से दमक रहा था। उसकी आँखों में चमक थी। वह जुलूस का नेतृत्व भी अद्भुत निर्भीकता से कर रहा था।

लोग आश्चर्य से देख रहे थे कि इन बालकों को पुलिस का जरा भी भय नहीं है। कुछ लोग पुलिस के डर से अपने-अपने घरों में जा छिपे थे। कुछ परिणाम की कल्पना करके चिन्तित हो रहे थे। कुछ लोग ऐसे भी थे जो इन बालकों के उत्साह की प्रशंसा क

रहे थे। किन्तु वे किशोर बालक अपनी धुन में आगे बढ़ते जा रहे थे। इतने में पुलिस की एक टुकड़ी ने जुलूस को घेर लिया और बालकों के कोमल हाथों में हथकड़ियाँ पहना दीं।

इन सभी बालकों को पकड़कर अदालत में लाया गया और मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। इस अनोखे मुकदमे को देखने के लिए अदालत में लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। सबसे पहले जुलूस के नेता को कठघरे में खड़ा किया गया। मजिस्ट्रेट ने बालक पर एक तीखी दृष्टि डाली और कड़क कर पूछा - तुम्हारा नाम ?

बालक - आजाद।

मजिस्ट्रेट - तुम्हारा घर ?

बालक - जेलखाना।

मजिस्ट्रेट - तुम क्या काम करते हो ?

बालक - भारत माँ को स्वाधीन कराने की साधना।

बालक गर्व से अपना सिर ऊँचा किये हुए बड़ी निर्भीकता से मजिस्ट्रेट के प्रश्नों के उत्तर देता रहा। मजिस्ट्रेट उसके उत्तर सुनकर जल-भुन गया। उसे सबसे अधिक क्रोध बालक की उद्‌दण्डता पर आया। उसने मन में सोचा- यदि यह बालक इतनी कम उम्र का न होता तो मैं इसे ऐसा दण्ड देता कि सारी उद्‌दण्डता भूल जाता। फिर उसने बालक को पन्द्रह बेंतों की सजा सुना दी।

बेंतों की मार की कल्पना से ही लोग घबरा गये किन्तु वह बालक अपने चेहरे पर मुस्कान लिये शान्त खड़ा था। सजा देने के लिये उसे जेल खाने में ले जाया गया। जब एक सिपाही उसके हाथ-पाँव बाँधने लगा तब वह तीव्र स्वर में बोला - मेरे हाथ-पाँव बाँधने
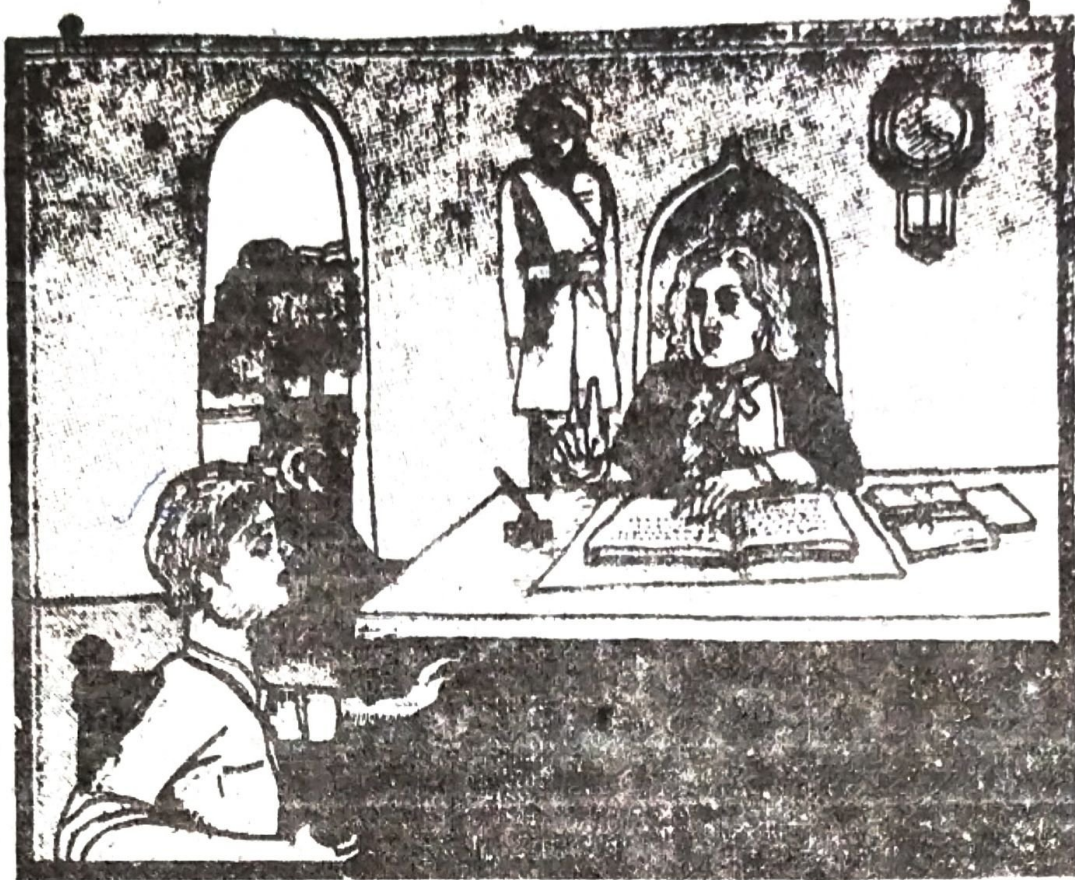
की आवश्यकता नहीं है। तुम बेंत लगाओ, मैं खड़ा हूँ।

बेंत लगाने वाला सिपाही उस बालक के साहस पर आ[illegible] था। बालक के कोमल शरीर पर बेंतों की मार पड़ने लगी। एक-दो-तीन-चार, बेंत पर बेंत बरसते रहे और हर बार मार के साथ वह यही कहता रहा-भारत माता की जय, गांधी जी की जय।

बालक की पीठ बेंत की मार से लहूलुहान हो गयी थी। जगह-जगह से चमड़ी उधड़ गयी थी और खून बह रहा था किन्तु उसके चेहरे पर पीड़ा का कोई चिह्न न था।

दण्ड पूरा हुआ और वह बालक उसी दृढ़ता से 'भारत माता की जय' का नारा लगाता हुआ घर की ओर चल पड़ा। ऐसे साहसी बालक को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। लोग उसका अभिनन्दन करने के लिए उतावले हो उठे। लोगों ने उसे कन्धों पर उठा लिया

इस घटना के बाद उस बालक का नाम ही पड़ गया – आजाद ये वही आजाद थे जिन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। कुछ बड़े होने पर वे क्रान्तिकारियों के दल में शामिल हो गये और उन्होंने देश को आजाद कराने का संकल्प कर लिया। उन्होंने यह भी प्रण किया, "अब मैं अंग्रेजी सरकार को जीते जी अपने शरीर को छूने भी न दूँगा।"

सन् १९२८ का वर्ष था। लाहौर में अंग्रेज पुलिस अधिकारी सांडर्स ने लाला लाजपत राय के जुलूस पर बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज कराया था। इस लाठी चार्ज में लालाजी को गहरी चोट लगी जिससे बाद में उनकी मृत्यु हो गयी। आजाद इसको न सह सके। उन्होंने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला सांडर्स को मारकर लिया। इस कार्य में उनके सहयोगी भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु थे।

आजाद की तरह अन्य क्रान्तिकारी युवकों ने भी अंग्रेजी शासन का अन्त करने के लिए संघर्ष किया। सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव अंग्रेजी शासन का विरोध करने में सक्रिय रहे। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय विधान भवन में बम फेंका। यह कार्य अंग्रेजों के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए किया गया। दोनों बम फेंकने के बाद अपने स्थान पर खड़े रहे और "क्रान्ति अमर रहे" का नारा लगाते रहे। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को प्राणदंड दिया गया।

अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष चलाने के लिए क्रान्तिकारियों को धन

कीं आवश्यकता थी। अतः राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह तथा रोशन सिंह ने लखनऊ के पास काकोरी नामक रेलवे स्टेशन पर उस समय सरकारी खजाना लूट लिया जब उसे ट्रेन द्वारा ले जाया जा रहा था। बाद में ये क्रान्तिकारी पकड़े गये और उन्होंनें हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

अनेक क्रान्तिकारियों के मारे जाने के बाद भी चन्द्रशेखर आजाद अपने संकल्प से नहीं डिगे। वे अंग्रेजी सरकार के अत्याचार और गुलामी के विरुद्ध सदा लड़ते रहे। एक बार वे इलाहाबाद के अलफ्रेड पार्क में अपने एक मित्र के साथ बैठे हुए थे। अचानक पुलिस ने उन्हें घेर लिया। इस पर अपने साथी को बच निकलने का संकेत करके आजाद अकेले पुलिस का सामना करने लगे। इसी बीच गोली लग जाने के कारण वे बुरी तरह घायल हो गये। अब उनकी पिस्तौल में केवल एक गोली बची थी। उन्होंने पिस्तौल की उस अन्तिम गोली से अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली।

आजाद अपने प्रण के पक्के थे। वे देश के लिए शहीद हो गये। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु भारत के इतिहास में उनका नाम सदा के लिए सुनहरे अक्षरों में लिखा रहेगा।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो :

लहूलुहान	=	खून से तर
अद्भुत	=	अनोखा
निर्भीकता	=	निडरता

उद्दण्डता	=	अक्खड़पन, न दबने वाला स्वभाव
अभिनन्दन	=	सराहना, स्वागत
सेनानी	=	सेनानायक
मजिस्ट्रेट	=	फौजदारी मुकदमे सुनने और शासन-प्रबन्ध का काम करने वाला अफसर
क्रान्तिकारी	=	व्यवस्था में उलट-फेर करने वाला
संकल्प	=	पक्का इरादा
बर्बरतापूर्वक	=	असभ्य ढंग से
लाठी चार्ज	=	भीड़ को तितर बितर करने के लिए पुलिस का लाठी से प्रहार करना
शहीद	=	देश के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाला

सोचो और बताओ

(१) बालक चन्द्रशेखर ने जुलूस क्यों निकाला ?

(२) चन्द्रशेखर को बेंतों की सजा क्यों दी गयी ?

(३) चन्द्रशेखर का नाम आजाद कैसे पड़ा ?

(४) आजाद ने पुलिस अधिकारी सांडर्स से बदला क्यों लिया ?

(५) आजाद ने क्या प्रतिज्ञा की ? उन्होंनें अपनी प्रतिज्ञा को कैसे निभाया ?

(६) चन्द्रशेखर की तरह और किन वीरों ने आजादी के लिए संघर्ष किया ?

(७) चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथियों के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उद्दण्डता	=	अक्खड़पन, न दबने वाला स्वभाव
अभिनन्दन	=	सराहना, स्वागत
सेनानी	=	सेनानायक
मजिस्ट्रेट	=	फौजदारी मुकदमे सुनने और शासन-प्रबन्ध का काम करने वाला अफसर
क्रान्तिकारी	=	व्यवस्था में उलट-फेर करने वाला
संकल्प	=	पक्का इरादा
बर्बरतापूर्वक	=	असभ्य ढंग से
लाठी चार्ज	=	भीड़ को तितर बितर करने के लिए पुलिस का लाठी से प्रहार करना
शहीद	=	देश के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाला

सोचो और बताओ

(१) बालक चन्द्रशेखर ने जुलूस क्यों निकाला ?

(२) चन्द्रशेखर को बेंतों की सजा क्यों दी गयी ?

(३) चन्द्रशेखर का नाम आजाद कैसे पड़ा ?

(४) आजाद ने पुलिस अधिकारी सांडर्स से बदला क्यों लिया ?

(५) आजाद ने क्या प्रतिज्ञा की ? उन्होंनें अपनी प्रतिज्ञा को कैसे निभाया ?

(६) चन्द्रशेखर की तरह और किन वीरों ने आजादी के लिए संघर्ष किया ?

(७) चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथियों के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

पाठ - ४

सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो
भौरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना।।

सीख हवा के झोंकों से लो
कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो
मिलना और मिलाना।।

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो
सबको गले लगाना।।

मछली से सीखो स्वदेश के
लिए तड़प कर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो
दुख में धीरज धरना।।

दीपक से सीखो जितना हो
सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना।।

जलधारा से सीखो आगे
जीवन-पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना।।

अभ्यास कार्य

१- पढ़ो और समझो

नित	=	नित्य, प्रतिदिन
तरु	=	वृक्ष
स्वदेश	=	अपना देश
धीरज	=	धैर्य

२- सोचो और बताओ

(क)-फूलों से हमें क्या सीखना चाहिए ?

(ख) सूरज की किरणों से हम क्या सीख सकते हैं ?

(ग) दीपक हमें क्या सिखाते हैं ?

३- भाषा कार्य

क- बताओ - नीचे लिखी वस्तुओं से हम क्या सीख सकते हैं ?

भौरों से	=	नित गाना
दूध और पानी से	=	मिलना और मिलाना।
लता और पेड़ों से	=	सबको गले लगाना।
मछली से	=	तो उपकार करना
पृथ्वी से	=	सबकी सेवा करना।
जलधारा से	=	जीवन पथ में बढ़ना।
धुएँ से	=	ऊँचे ही पर चढ़ना

ख- नीचे लिखी पंक्तियों के खाली स्थान को पूरा करो-

दीपक से सीखो ....
.... अँधेरा हरना।

पृथ्वी से सीखो . . . .

. . . . करना।

ग- नीचे लिखे शब्दों का तुक मिलाओः-

जैसे -	जगाना	-	लगाना
	बहाना	-	
	भरना	-	
	हरना	-	
	बढ़ना	-	

अध्यापन-संकेत

शुद्ध उच्चारण के साथ कविता का सामूहिक वाचन करायें।

पाठ-५

.जब मैं पढ़ता था

मेरे पिता करमचन्द गांधी थे। वे राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा उचित न्याय करते थे।

मेरी माता का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा-पाठ किये बिना भोजन नहीं करती थीं।
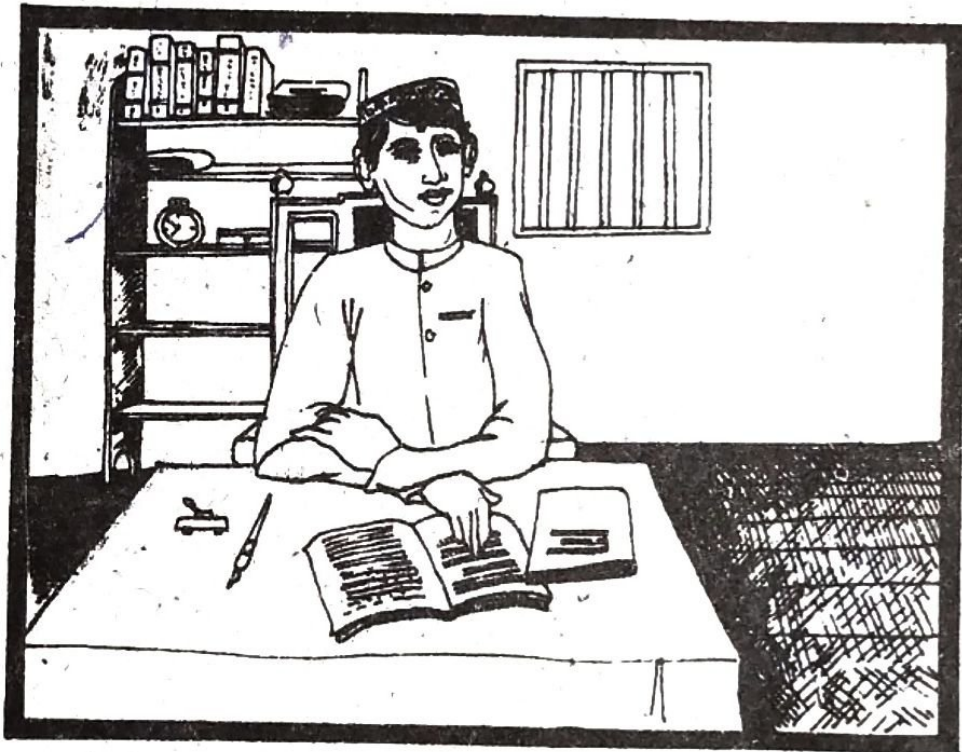
२ अक्टूबर सन् १८६९ को पोरबन्दर में मेरा जन्म हुआ। पोरबन्दर से पिता जी जब राजकोट गये तब मेरी उम्र सात वर्ष की रही होगी। पाठशाला से फिर ऊपर के स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया। मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था।

एक बार पिता जी 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक की एक किताब खरीद लाये थे। मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा। उन्हीं दिनों शीशे में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अपने अन्धे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने कहा कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चन्द्र'' नाटक भी देखा। बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार-बार मेरे मन में यह बात उठती कि सभी हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें। यही बात मन में बैठ गयी कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति दुख उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जब मैं केवल तेरह वर्ष का था, तभी मेरा विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया था। मगर मेरी पढ़ाई चलती रही। पाँचवीं और छठी कक्षा में तो छात्रवृत्तियाँ भी मिली थीं।

अपने आचरण की ओर मैं ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। शिक्षक का कुछ कहना ही मेरे लिए असह्य हो जाता। अपने से बड़ों तथा शिक्षकों का अप्रसन्न होना मुझसे सहन नहीं हो पाता था।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। सैर करना भी एक प्रकार का व्यायाम ही है। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं, यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैण्ड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया। परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है!

सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

मेरे संस्कृत शिक्षक काम लेने में बड़े सख्त थे। फारसी के शिक्षक

नरम थे। विद्यार्थी आपस में बातें भी करते कि फारसी बहुत सरल है। यह सुनकर मैं ललचाया और एक दिन फारसी की कक्षा में जा बैठा। यह देखकर संस्कृत शिक्षक ने मुझे बुलाया और समझाया, "तुमको संस्कृत समझने में कोई कठिनाई हो तो मुझे बताओ। मैं तो सब विद्यार्थियों को अच्छी तरह संस्कृत पढ़ाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस ही रस है। देखो, हिम्मत न हारो। तुम फिर मेरी कक्षा में आकर बैठो।" मैं उन शिक्षक के प्रेम के कारण इनकार न कर सका। आज भी मैं उनका उपकार मानता हूँ क्योंकि आगे चलकर मैंने समझा कि संस्कृत का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

मैं हाईस्कूल में मन्दबुद्धि विद्यार्थी नहीं माना जाता था। पर जहाँ तक याद है, मुझे कभी होशियारी का कोई गर्व नहीं था। इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था। लेकिन अपने आचरण की मुझे बड़ी चिन्ता रहती थी। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो जिसके लिए शिक्षक मुझे दण्ड दे, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुख न था पर मैं दण्ड का पात्र समझा गया, इस बात का बड़ा दुख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय के हमारे हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों के प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के विद्यार्थियों के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिये थे। मेरा मन इन चीजों में न लगता था। केवल अनिवार्य होने के पहले तो मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट

या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी एक कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति यह अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में यह गलत विचार घर किये हुए था कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था - पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बन्द होते ही तुरन्त घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। अब व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिता जी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थनापत्र दिया, पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सवेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे, इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना। और मुझे एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना दण्ड देना पड़ा। मैं झूठा बना। मुझे भारी दुख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ, यह कैसे सिद्ध करूँ? कोई उपाय न था। मैं मन मारकर रह गया। रोया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

मोहनदास कमरचन्द गांधी

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

शब्द	=	अर्थ
सत्यप्रिय	=	सच्चाई को चाहने वाला
सत्यवादी	=	सच बोलने वाला
छात्रवृत्ति	=	वजीफा
असह्य	=	न सहन करने योग्य
अप्रसन्न	=	नाराज
लाभकारी	=	फायदा पहुँचाने वाला
मन्दबुद्धि	=	कम समझदार
गर्व	=	अभिमान
अनिवार्य	=	बहुत आवश्यक, जो टाला न जा सके
विघ्न	=	बाधा या रुकावट
असावधान	=	लापरवाह

सोचो और बताओ

(१) गाँधी जी के पिता का स्वभाव कैसा था ?

(२) गांधी जी की माँ कैसे स्वभाव की महिला थीं?

(३) श्रवणकुमार नाटक का गांधी जी के मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(४) हरिश्चन्द्र के किस गुण को गांधी जी बहुत पसन्द करते थे?

(५) सैर करने की आदत से गांधीजी को क्या लाभ हुआ?

(६) खेल में अनुपस्थित रहने पर गांधी जी बहुत दुखी क्यों हुए?

भाषा कार्य

(१) 'धर्म' संज्ञा शब्द है और इससे विशेषण शब्द "धार्मिक" बनता है। इसी प्रकार नीचे दिये गये संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाओ:

वर्ष = ...

मास = ...

पक्ष = ...

अर्थ = ...

(२) नया शब्द बनाओ :

उदाहरण

साहस = साहसी

संकोच = ...

धन = ...

लोभ = ...

(३) 'सत्य' का उलटा अर्थ देने वाला शब्द 'असत्य' है। उलटे अर्थ वाले शब्द विलोम कहलाते हैं। इसी प्रकार 'अ' जोड़कर विलोम शब्द बनाओ :

शब्द	विलोम
सत्यवादी	. . . .
सह्य	. . . .
रुचि	. . . .
प्रसन्न	. . . .

(४) नीचे दिये गये शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो :

गर्व लाभकारी सावधान विघ्न व्यायाम

अध्यापन संकेत

(१) शिक्षक निम्नलिखित शब्दों को बोलें और छात्रों से अभ्यास-पुस्तिका लिखवायें-

छात्रवृत्ति अप्रसन्न सत्यप्रिय गर्व अनिवार्य पितृभक्ति

(२) गांधी जी के बचपन के बारे में छात्रों से पांच वाक्य लिखवायें।

पाठ-६

ढोंगी बिल्ला

पीपल का एक बहुत बड़ा पेड़ था। उसी के पास एक तीतर रहता था। पीपल के आस-पास बहुत से पशु-पक्षी रहते थे, जिनसे तीतर की बड़ी मित्रता थी।

एक दिन तीतर भोजन की तलाश में निकला। उड़ते-उड़ते वह घर से बहुत दूर चला गया। अचानक उसकी नजर धान के एक खेत पर पड़ी। उन दिनों फसल लगभग तैयार थी। अपना प्रिय भोजन पाकर तीतर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा इधर-उधर भटकने से क्या लाभ! वह उसी खेत के पास रहने लगा। उसे वहाँ रहते कई दिन बीत गये।

जिन दिनों तीतर खेत में था, उन्हीं दिनों कहीं से एक खरगोश उस पीपल के पेड़ के पास आया। उसने वहाँ तीतर का खाली घोंसला देखा और उसे अपना घर बना लिया। वह आनन्दपूर्वक वहाँ रहने लगा।

कुछ दिनों बाद तीतर वापस आया तो वह अपने घर में खरगोश को देखकर बड़ा नाराज़ हुआ और बोला, 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? यह तो मेरा घर है।'' खरगोश ने क्रोध में कहा। ''तुम्हारा ?'' यह घर तुम्हारा कभी रहा होगा, अब तो यह मेरा घर है। पिछले कई दिनों से मैं यहाँ रह रहा हूँ। मैंने तो तुम्हें यहाँ कभी नहीं देखा।''

तीतर ने कहा ''यह घर मैंने अपने लिए अपने हाथों से बनाया था। बहुत दिनों से मैं इसी में रह रहा था। बस इधर कुछ दिनों से मैं बाहर गया था। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो पड़ोस में किसी से इस विषय में पूछ सकते हो।''

''मैं क्यों पूछूँ ? मैं जब यहाँ आया था तो यह बिल्कुल खाली था। अब मैं इसमें रह रहा हूँ, इसलिए अब यह मेरा है। तुम्हें विश्वास न हो तो तुम्हीं पड़ोसियों से क्यों नहीं पूछ लेते।''

''यह सब व्यर्थ की बकवास है।'' तीतर ने चिल्लाकर कहा, ''मैं कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया था, तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि मैं सदैव के लिए मकान खाली कर गया। तुम मेरा मकान खाली करो और यहाँ से तुरन्त चलते बनो।''

''यह कभी नहीं हो सकता,'' खरगोश ने कहा, ''यह मेरा मकान है, मैं इसमें रह रहा हूँ और ठाट से रहूँगा। तुम्हें जो करना है कर लो। तुम्हारी किसी गीदड़ भभकी का कोई असर मेरे ऊपर नहीं होगा, यह अच्छी तरह समझ लो।''

इस तरह दोनों के बीच झगड़ा बढ़ने लगा। उनकी तू-तू मैं-मैं सुनकर कई पशु-पक्षी जमा हो गये। उन्होंने तीतर और खरगोश दोनों

की बातें सुनीं, मगर कोई न तय कर पाया कि मकान किसका है। उन्होंने सुझाया कि ऐसे उलझे हुए झगड़े को तय करने के लिए किसी वयोवृद्ध अनुभवी पशु अथवा पक्षी की सहायता लेनी चाहिए, जिसे कानूनी जानकारी भी हो और जो निष्पक्ष होकर न्याय कर सके।

तीतर और खरगोश दोनों किसी ऐसे अनुभवी को खोजने निकले। महीनों इधर-उधर भटकने के बाद वे गंगा के तट पर पहुँचे। कुछ दूरी पर उन्हें एक बड़ा सा बिल्ला दिखायी दिया। बिल्ले पर नजर पड़ते ही दोनों ठिठक कर खड़े हो गये। दोनों अच्छी तरह से जानते थे कि बिल्ला उनके लिए बहुत खतरनाक है।

वह बिल्ला बहुत ही चालाक था। खरगोश और तीतर को अपनी ओर आते देख उसने चट आँखें मूँद लीं। वह हाथ में माला लेकर इस तरह बैठ गया मानो बड़े ध्यान से ईश्वर का नाम जप रहा है।

तीतर और खरगोश बिल्ले का यह रूप देखकर चक्कर में पड़ गये। ऐसा धर्मात्मा बिल्ला उन्होंने पहली बार देखा था। उन्होंने मन ही मन सोचा कि अब इधर-उधर भटकने से कोई लाभ नहीं। इतना सज्जन और वयोवृद्ध पशु अब कहाँ मिलेगा ?

''मेरे विचार से इस बिल्ले को हम अपना सरपंच बना लें और अपना झगड़ा इसके सम्मुख रखें,'' खरगोश ने कहा।

तीतर बोला ''हाँ, कह तो ठीक रहे हो। वैसे तो यह हमारा जन्मजात दुश्मन है पर आश्चर्य की बात है कि वह हमें देख तक नहीं रहा है।''

''सब संसार में एक जैसे थोड़े ही होते हैं। यह बिल्ला स्वभाव से ही सज्जन और धर्मात्मा प्रतीत होता है। चलो, इसी से न्याय के लिए कहते हैं।'' खरगोश ने कहा।

दोनों बिल्ले के पास जाकर चुपचाप खड़े हो गये। पूजा समाप्त करने के बाद उस ढोंगी बिल्ले ने आँखे खोलकर उन्हें देखा।

''श्रीमन्, मेरे और इस तीतर के बीच एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ है। हम आपको अपना सरपंच बनाना चाहते हैं। आप जो भी निर्णय लेंगे, हम दोनों को मान्य होगा,'' खरगोश ने बड़े आदर से झुककर कहा।

बिल्ला बोला, ''राम, राम ! क्यों आपस में झगड़ा करते हो ? मिल-जुलकर रहना ही हम पशु-पक्षियों का धर्म है। मैं किसी विवाद में नहीं पड़ना चाहता, लेकिन अब जब तुम दोनों इतनी आशा से आये हो तो तुम्हारे झगड़े का निपटारा करना ही मेरा धर्म है। अब

बताओ झगड़ा क्या है? हाँ! खरगोश बेटा, पहले तुम बोलो''

तीतर बोला, ''श्रीमन्, पहले कृपया मेरी बात सुनें। एक पीपल के तले मेरा घर है, मैं उसी में रहता था। भोजन की तलाश में मुझे कुछ दिनों बाहर रहना पड़ा। एक दिन जब घर लौटा तो देखा कि इन खरगोश महोदय ने मेरे घर पर कब्जा जमा लिया है। अब यह उसे छोड़ने को तैयार ही नहीं होते।''

''मैं क्यों छोड़ूँ?'' खरगोश चिल्लाकर बोला, ''वह घर मेरा है।''

बिल्ले ने दोनों को रोकते हुए कहा, ''शान्ति भाई शान्ति! मुझे पूरी बात समझने तो दो।''

इस पर दोनों फिर अपने-अपने तर्क रखने लगे। बिल्ला चुपचाप सुनता रहा। कुछ देर बाद वह खाँसते हुए बोला ''बच्चो, मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए मुझे न तो दूर से कुछ दिखाई पड़ता है और न ही सुनाई देता है। असल में मैं पूरी बात सुन नहीं पाया। तुम दोनों जरा पास आकर बात बताओ तो मैं पूरी बात ठीक से समझ सकूँ।''

झगड़े के जोश में क्रोध के कारण तीतर और खरगोश दोनों ही बिंल्ले से अपनी जन्मजात शत्रुता की बात भूल गये। उन्हें उसकी बातों पर पूरा भरोसा हो चला था। वे दोनों बड़ी निडरता से उसके बिलकुल पास चले गये।

अचानक बिल्ले ने बिजली की तरह कड़ककर दोनों को पकड़ लिया और कहा, मूर्खों!, आपसी झगडे का यही नतीजा होता है। अब मैं तुम दोनों के स्वादिष्ट मांस से अपनी भूख शान्त करूँगा।''

जन्मजात शत्रु पर विश्वास करने का यही परिणाम होता है।

अभ्यास - कार्य

पढ़ो और समझो

न्याय	=	इंसाफ
प्रसन्न	=	खुश
आनन्दपूर्वक	=	खुशी से
गीदड़ भभकी	=	दिखाऊ धमकी
वयोवृद्ध	=	बूढ़ा
अनुभवी	=	तजरबेकार, जानकार, योग्य
निष्पक्ष	=	पक्षपात न करने वाला
धर्मात्मा	=	धर्म के अनुसार काम करने वाला
जन्मजात	=	पैदायशी
प्रतीत होना	=	मालूम पड़ना
शत्रुता	=	दुश्मनी, वैर
निर्णय	=	फैसला

परिणाम = नतीजा

स्वादिष्ट = जायकेदार, अच्छे स्वाद वाला

सोचो और बताओ

(१) खरगोश के आने से पहले पीपल के पेड़ के तले कौन रहता था ?

(२) तीतर अपना मकान छोड़कर क्यों चला गया ?

(३) तीतर और खरगोश के बीच झगड़ा किस बात को लेकर बढ़ा ?

(४) बिल्ले को अपना दुश्मन जानते हुए भी खरगोश और तीतर ने उसे अपना सरपंच क्यों बनाया ?

(५) आपसी झगड़े का परिणाम क्या हुआ ?

भाषा-कार्य

(क) पढ़ो, समझो और लिखो -

(१) उन्होंने तीतर और खरगोश की बात सुनी मगर कोई न तय कर पाया कि मकान किसका है।

(२) तीतर और खरगोश दोनों किसी अनुभवी को खोजते हुए निकले।

(३) यह हमारा जन्मजात दुश्मन है पर आश्चर्य की बात है कि वह हमें देख तक नहीं रहा है।

(४) मैं किसी विवाद में नहीं पड़ना चाहता लेकिन तुम दोनों मेरे पास बड़ी आशा से आये हो।

इन वाक्यों को पढ़ो और रेखांकित शब्दों की ओर ध्यान दो। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। ऐसे शब्दों को 'योजक' शब्द कहते हैं। योजक शब्दों का काम दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ना होता है। ऐसे चार वाक्य बनाओ जिनमें पर, मगर, लेकिन, और शब्दों का प्रयोग किया जाय।

उड़ते-उड़ते वह बहुत दूर चला गया।

उड़ते-उड़ते शब्द पर ध्यान दो। इसी तरह चलते-चलते, गाते-गाते, जाते-जाते शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो।

अध्यापन-संकेत

(१) कुछ चुने हुए छात्रों को कक्षा में कहानी सुनाने के लिए कहें।

(२) छात्रों को इस कहानी को अपने शब्दों में लिखने का निर्देश दें।

पाठ-७

चेतक की वीरता

रण बीच चौकड़ी भर-भर कर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।।

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
यह आसमान पर घोड़ा था।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में॥

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं॥

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ठहर गया
विकराल वज्रमय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।

भाला गिर गया गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग॥

श्याम नारायण पाण्डेय

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

रण	=	युद्ध
अरि-मस्तक	=	शत्रु का सिर
तनिक	=	थोड़ा-सा या थोड़ी- सी
कौशल	=	निपुणता
निर्भीक	=	निडर
करवाल	=	तलवार
नद	=	बड़ी नदी
विकराल	=	भयंकर
वज्रमय	=	बहुत कठोर (वज्र की तरह कठोर)
निषंग	=	तरकश
हय	=	घोड़ा

सोचो और बताओ

(१) किस तरह की चाल से चेतक युद्ध में निराला दिखाई प्रड़ता था ?

(२) "थी जगह न कोई जहाँ नहीं" - इससे चेतक की किस निपुणता का पता चलता है?

(३) चेतक किस तरह शत्रु की सेना पर टूट पड़ता था?

(४) क्या देखकर बैरी समाज दंग रह गया?

(५) हम राणा प्रताप को क्यों याद करते हैं?

भाषा कार्य

(१) नीचे दिये गये शब्दों के तुकान्त शब्द कविता से खोजकर बताओ-

निराला कोड़ा चाल लहर ढंग

(२) इन पंक्तियों के अर्थ लिखो-

(क) राणा प्रताप के घोड़े से
पड़ गया हवा का पाला था।

(ख) विकराल वज्रमय बादल-सा
अरि की सेना पर घहर गया।

(ग) राणा की पुतली फिरी नहीं
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

अध्यापन-संकेत

(१) इस कविता को यादकर कक्षा में सुनाने का निर्देश दें।

(२) साहस और वीरता के भाव जगाने वाली कोई और कविता यादकर सुनाने को कहें।

पाठ-८

चिड़ियों की चिन्ता

जंगल में बरगद का एक ऊँचा पेड़ था। उसमें गौरैया, कोयल, तोता, मैना, बुलबुल जैसी बहुत सी चिड़ियाँ रहती थीं। उनमें एक बूढ़ा कौआ भी था। वह बहुत सी बातें जानता था। शाम के समय सब चिड़ियाँ बरगद के नीचे आकर बैठ जाती थीं और कौए से देश-विदेश के बारे में मजेदार कहानियाँ सुना करती थीं। इनमें गरुड़ भी था। वह बड़े चाव से कहानियाँ सुना करता था और बीच-बीच में कौए से तरह-तरह की बातें पूछा करता था।

एक दिन शाम को गरुड़ कुछ जल्दी आ गया। उसे देखकर बहुत सी चिड़ियाँ भी वहाँ आ गयीं। कौए को प्रणाम करके गरुड़ बैठ गया। फिर दोनों में बातें होने लगीं।

कौआ - कहिए गरुड़ जी, आज आप कैसे जल्दी आ गए हैं ?

गरुड़ - चिड़ियों की बहुत गम्भीर चिन्ता के बारे में आपको बताना चाहता हूँ।

कौआ - क्या बात है? आखिर चिड़ियों को किस बात की चिन्ता है?

गरुड़ - इधर आते समय मैंने देखा कि बहुत सी चिड़ियाँ बातें कर रहीं थी-मनुष्य कितना क्रूर बन गया है। वह पेड़-पौधों को काटता जा रहा है। इन पेड़-पौधों में ही तो हम रहने के लिए अपने घोंसले बनाते हैं।

कौआ - आपने उन्हें बताया होता कि वे दूसरे पेड़ों पर अपने घोंसले बना लें।

गरुड़ - उन्हें कैसे विश्वास हो कि उनके घोंसलों वाले पेड़ नहीं कटेंगे?

कौआ - खेती के लिए अधिक भूमि चाहिए। इसलिए मनुष्य जंगलों को काटकर उन्हें खेतों मे बदल रहा है।

गरुड़ - आदमी पहले भी थे और आज भी हैं, फिर खेती के लिए जंगलों को काटने की आवश्यकता क्यों हुई?

कौआ - इसका कारण तो मनुष्य की संख्या में लगातार वृद्धि होना है। अब उन्हें बढ़ी हुई आबादी के लिए अधिक अनाज चाहिए। इसलिए खेत भी अधिक चाहिए।

गरुड़ - वन कटने और बाग-बगीचे घटने से पशु-पक्षियों की कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयी हैं। इन्हें दूर करने का क्या उपाय

है?

कौआ - इन्हें दूर करने का यही उपाय है कि पेड़-पौधों की रक्षा की जाय। उन्हें अन्धाधुन्ध काटा न जाय। वन और हरे-भरे पेड़-पौधों से वायु शुद्ध होती रहती है। पेड़ के सभी हिस्सों का किसी न किसी काम में प्रयोग होता है। इसलिए वनों और पेड़-पौधों का घटना तो मनुष्यों के लिए भी हानिकारक है।

गरुड़ - तो फिर मनुष्य अपना भला क्यों नहीं सोच पा रहा है ?

कौआ - धीरे-धीरे मनुष्य अपनी गलती को समझ रहा है। इसलिए पेड़-पौधों को लगाकर हरियाली बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है।

गरुड़ - तब तो बेचारी चिड़ियों को बताऊँगा कि अब पशु-पक्षियों का जीवन भी सुखमय हो जायगा।

कौआ - आपका सोचना सही है। संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे अधिक समझदार होता है। वह सद्बुद्धि से काम करेगा। वह वन और बाग-बगीचे बढ़ायेगा। इसी में उसकी और दूसरे प्राणियों की भलाई है।

कौए की बात सुनकर सभी चिड़ियों ने चैन की साँस ली। रात का अँधेरा बढ़ गया था। इसलिए सभी पक्षी कौए को नमस्कार कर अपने-अपने घोंसलों में चले गये।

अभ्यास - कार्य

१- पढ़ो और समझो

क्रूर	=	निर्दय
विश्वास	=	भरोसा, यकीन
आवश्यकता	=	जरूरत
आबादी	=	जनसंख्या
अन्धाधुन्ध	=	बिना सोचे-विचारे
हानिकारक	=	हानि पहुँचाने वाला
सुखमय	=	सुख से भरा हुआ, आराम देने वाला
सद्बुद्धि	=	सुबुद्धि, अच्छे विचार

२- सोचो और बताओ

क- आबादी बढ़ने का क्या परिणाम हुआ?

ख- वन हमारे जीवन के लिए क्यों उपयोगी हैं?

ग- चिड़ियों को किस बात की चिन्ता थी?

घ- चिड़ियाँ मनुष्य को 'क्रूर' क्यों समझती थीं?

- भाषा-कार्य

क- 'चिड़िया' का बहुवचन 'चिड़ियाँ' और 'कहानी' का बहुवचन 'कहानियाँ' होता है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के बहुवचन I

बुढ़िया =

डिबिया =

नदी =

कठिनाई =

हानि =

ख- 'पशु-पक्षी' शब्द से 'पशु और पक्षी' का बोध होता है। पाठ में प्रयुक्त इस प्रकार के चार शब्दों को छाँटकर लिखो।

ग- नीचे लिखे शब्दों का एक-एक समानार्थी शब्द लिखो-

पक्षी =

जंगल =

पेड़ =

आदमी =

घ- 'सुखमय' में दो शब्द हैं - सुख+मय,जिसका अर्थ है सुख से भरा हुआ। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में 'मय' शब्द जोड़कर नया शब्द बनाओ-

कष्ट =

दुख =

आनन्द =

उल्लास =

ङ- नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण करो-

गौरैया, प्रणाम, आवश्यकता, वन।

अध्यापन-संकेत

बच्चों से गरुड़ और कौए के संवाद का अभिनय कराइए।

पाठ-९

सरोजिनी नायडू

भारत को स्वतन्त्र कराने में भारतीय नारियों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। स्वतन्त्रता के आन्दोलन में उन्होंने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। ऐसी नारियों में सरोजिनी नायडू का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

सरोजिनी का जन्म हैदराबाद में हुआ। उनके पिता डॉ. अघोरनाथ चट्टोपाध्याय भारतीय संस्कृति के विद्वान थे। वे एक कुशल वैज्ञानिक भी थे। उन्होंने हैदराबाद में निजाम कालेज की स्थापना की। वे वर्षों तक इसी कालेज के प्रिंसिपल रहे। सरोजिनी की माता श्रीमती वरदा सुन्दरी भी सुशिक्षित महिला थीं। वे बंगला में कविता लिखती थीं।

बालिका सरोजिनी को पुस्तकों से बड़ा प्रेम था। उसके हाथ में कोई न कोई पुस्तक लगी ही रहती थी। यह कितने आश्चर्य की बात है कि केवल बारह वर्ष की उम्र में ही उसने हाईस्कूल की परीक्षा पास कर ली थी। बचपन से ही कविता पढ़ने में उसकी रुचि थी। वह गाती भी बहुत अच्छा थी। वह जब मधुर स्वर में कविता पाठ करती तब उसके माता-पिता बड़े प्रसन्न होते। सरोजिनी में स्वयं भी कविता लिखने की प्रतिभा थी। तेरह वर्ष की उम्र में ही उसने

एक बड़ी और सुन्दर कविता लिखी। एक छोटी सी लड़की अंग्रेजी में इतनी सुन्दर कविता लिखे, यह जानकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने इस बालिका की बड़ी प्रशंसा की। हैदराबाद के निजाम तो इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने सरोजिनी को छात्रवृत्ति देकर इंग्लैंड पढ़ने भेज दिया।

इंग्लैंड में अपनी पढ़ाई के साथ-साथ सरोजिनी अंग्रेजी में कविताएं भी लिखती रही। लोग उसकी कविताओं से बड़े प्रभावित हुए। इंग्लैंड से लौटने पर सरोजिनी ने गोविन्द राजलु नायडू से शादी कर ली।

उन दिनों सारे देश में स्वतंत्रता-आन्दोलन छिड़ा हुआ था। भला सरोजिनी पीछे कैसे रहतीं! वे भी आन्दोलन में कूद पड़ीं। उन्होंने अन्य नारियों को भी आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और देश के सभी भागों में घूम-घूम कर जनता में स्वतंत्रता की चेतना जगायी। १९३२ ई. में महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह-आन्दोलन प्रारम्भ किया। अंग्रेजों ने कई बड़े-बड़े नेताओं को जेलों में बन्द कर दिया। उस समय सरोजिनी नायडू ने बड़ी कुशलता से सत्याग्रह-आन्दोलन चलाया। स्त्री-पुरुष, बालक-बूढ़े सभी ने उनके नेतृत्व में जगह-जगह नमक आन्दोलन को सफल बनाया।

सरोजिनी की योग्यता और देशसेवा से प्रभावित होकर एक बार कांग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना। इतनी बड़ी संस्था का अध्यक्ष होना किसी महिला के लिए बड़े सम्मान की बात थी। उन दिनों देश में जगह-जगह हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे थे। सरोजिनी नायडू ने देश भर में घूम-घूम कर लोगों को समझाया कि स्वतंत्रता के

लिए सभी भारतीयों का मेल से रहना आवश्यक है। आपस में लड़ने-झगड़ने से विदेशी शासन को बल मिलता है।

सरोजिनी नायडू एक कुशल वक्ता थीं। उनकी वाणी में जादू था। जहाँ कहीं भी वे भाषण देने खड़ी हो जातीं, लोगों की भीड़ टूट पड़ती थी। वे अमरीका और अफ्रीका भी गयीं। वहाँ उन्होंने लोगों को भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन के विषय में बताया। लोग उनके भाषणों से प्रभावित हुए और सोचने लगे कि इतने महान देश को स्वतंत्रता मिलनी ही चाहिए।

सत्याग्रह-आन्दोलन में भाग लेने के कारण सरोजिनी नायडू को कई बार जेल भी जाना पड़ा। बार-बार जेल जाने से उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, फिर भी वे उत्साह से देश-सेवा के काम में लगी रहीं।

देश के स्वतंत होने पर सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। वे स्वतंत भारत की पहली महिला राज्यपाल थीं।

यद्यपि सरोजिनी नायडू आज हमारे बीच में नहीं हैं, किन्तु उन्होंने देश की जो सेवा की उसके लिए उन्हें सदैव सम्मान के साथ स्मरण किया जायेगा। वे केवल चोटी की देश-सेविका ही नहीं थीं बल्कि प्रसिद्ध कवयित्री भी थीं। उन्होंने अनेक कविताएं लिखी हैं जिन्हें लोग बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। वे इतने मधुर स्वर में कविता-पाठ करती थीं कि श्रोता मुंग्ध हो जाते थे। यही कारण है कि वे भारत-कोकिला कहलायीं।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

सुशिक्षित = भली-भाँति शिक्षा प्राप्त
प्रशंसा = बड़ाई या तारीफ़
प्रोत्साहित करना = उत्साह बढ़ाना
वक्ता = बोलने वाला, भाषण देने वाला
वाणी = वचन, मुख से बोले गये शब्द
देश-सेविका = देश की सेवा करने वाली
कवयित्री = कविता करने वाली महिला
मधुर = मीठा
स्मरण करना = याद करना

सोचो और बताओ

(१) सरोजिनी नायडू के किस गुण से प्रभावित होकर निजाम ने उन्हें छात्र देकर पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड भेजा?
(२) सरोजिनी नायडू को जेल क्यों जाना पड़ा।
(३) आज भी लोग सरोजिनी नायडू को क्यों याद करते हैं?
(४) सरोजिनी नायडू को भारत-कोकिला क्यों कहा जाता है?
(५) सरोजिनी नायडू के भाषण का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता था?

भाषा-कार्य

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाओ :

उदाहरण :

सेवक   सेविका
बालक   . . . .

प्रशासक ....

संचालक ....

संरक्षक ....

(२) नीचे दो वाक्य दिये गये हैं। प्रत्येक वाक्य को तोड़कर दो वाक्यों में लिखो-

(क) सरोजिनी की योग्यता और देश सेवा से प्रभावित होकर एक बार कांग्रेस ने उन्हें अपना अध्यक्ष चुना।

(ख) देश के स्वतंत होने पर सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया।

(३) विशेषण बनाओ-

उदाहरण :

भारत	भारतीय	मण्डल	....
जनपद	....	राष्ट्र	....
क्षेत्र	....	स्थान	....

अध्यापन-संकेत

(१) निम्नलिखित शब्दों को बोलकर छात्रों से लिखवायें-

छात्रवृत्ति, कवयित्री, सुशिक्षित, सत्याग्रह, आन्दोलन, वक्ता, भारत-कोकिला, प्रभावित

(२) देश के स्वतन्त्रता-आन्दोलन के कुछ और नेताओं के बारे में पढ़ने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करें।

पाठ-१०

पहली उड़ान

मनुष्य के पास पक्षियों की तरह पंख तो नहीं हैं कि वह जब चाहे आकाश में उड़ सके। फिर भी आकाश में उड़ने की इच्छा उसमें सदा रही है। प्राचीन कथाओं में विमान का वर्णन कई बार आया है। तुमने रामायण की कहानी तो पढ़ी होगी। उसमें वर्णन है कि रावण सीता को आकाश मार्ग से लंका ले जाता है। राम लंका से पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या लौटते हैं। पुराणों में भी इसी तरह की कथाएँ हैं, जिनमें मनुष्य के उड़ने का वर्णन है।

वे प्राचीन कथाएँ आज कितनी सच लगती हैं! अब तो मनुष्य उड़ता है और उसे पंख भी नहीं लगाने पड़ते। उसके उड़ने की गति भी इतनी तेज है कि तीव्र से तीव्र गति से उड़ने वाला पक्षी भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। यह मनुष्य की लगन और परिश्रम का परिणाम है कि वह आकाश की ही नहीं, अन्तरिक्ष की भी यात्रा कर आया है। यह सब एक दिन में ही नहीं हो गया। निरन्तर विज्ञान की खोज में लगे रहने का ही यह परिणाम है। वे वैज्ञानिक सचमुच सराहनीय हैं जिन्होंने मनुष्य के उड़ने के स्वप्न को साकार किया।

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहले की बात है। फ्रांस की राजधानी पेरिस में दो भाई रहते थे - जोसफ और स्टीफन। एक दिन दोनों खाना खा रहे थे। उनकी माँ ने आग तेज करने के लिए फूँक मारी तो धुएँ के साथ कुछ राख भी ऊपर को उड़ी। जोसफ यह देखकर उछल पड़ा। वह बोला-देखो, धुआँ राख को ऊपर उड़ा सकता है।
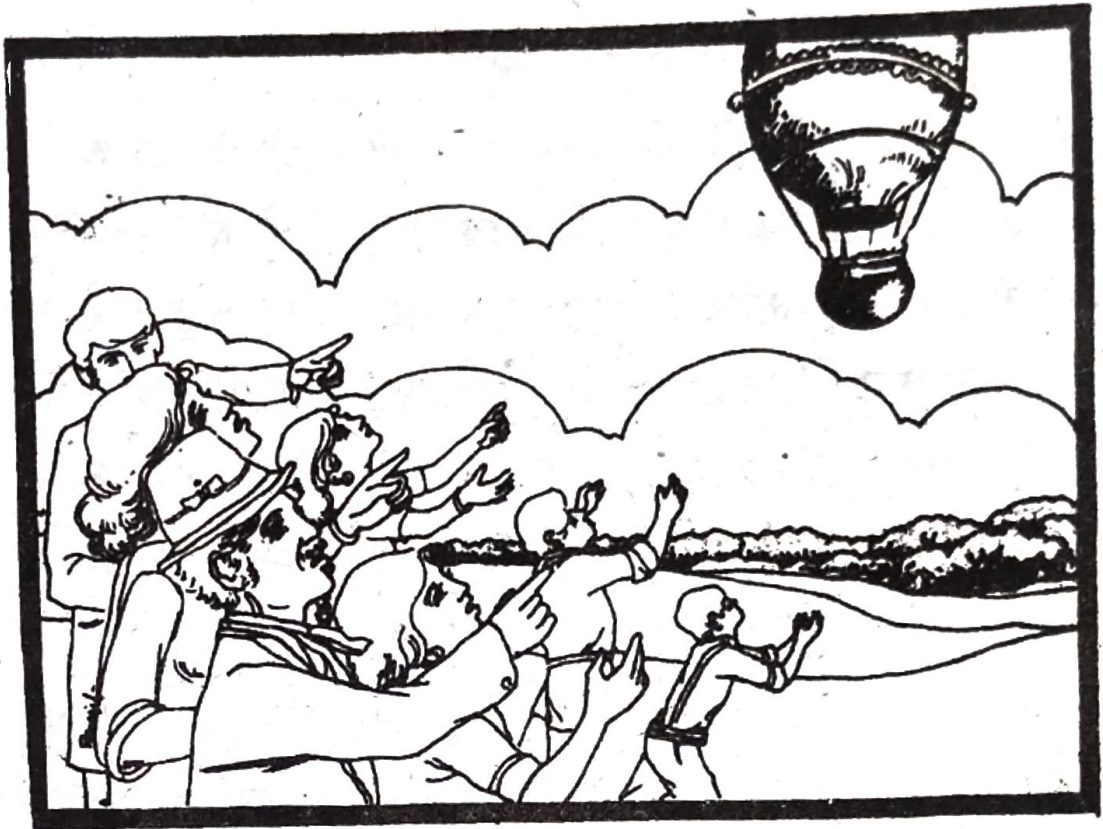
दोनो भाइयों ने सोचा-यदि किसी लिफाफे में धुआँ भर दिया जाय तो वह अवश्य ऊपर की ओर उड़ेगा। फिर क्या था? उन्होंने झटपट कई प्रयोग कर डाले और एक दिन सचमुच धुएँ से भरा लिफाफा छत से जा टकराया।

सितम्बर १७८३ के दिन थे। दोनो भाई एक बड़े गुब्बारे के पास खड़े थे। गुब्बारा उड़ने के लिए तैयार था। एक टोकरे में मुरगा, बत्तख और भेड़ को बन्द करके गुब्बारे को बाँधा जा रहा था। लोग पास खड़े हँस रहे थे। वह गुब्बारा आठ मिनट की उड़ान के बाद एक वृक्ष से जा टकराया और जिस रस्सी से टोकरा बँधा था, वह टूट गयी। सभी नीचे आ गिरे।

ठीक इसके दो महीने बाद की बात है। मैदान में रस्सों से बँधा हुआ एक बहुत बड़ा गुब्बारा ऊँचे स्थान पर रखा हुआ था। उसके नीचे आग जल रही थी और गुब्बारे में गरम हवा भर रही थी। यह गुब्बारा बहुत ही सुन्दर था। इस पर कई तरह की चित्रकारी की गयी थी। रंग-बिरंगे कागज भी चिपकाये गये थे। लोग आश्चर्य से देख रहे थे कि इतने सुन्दर गुब्बारे को ये दोनों भाई क्यों जलाना चाहते हैं। जब उसमें बहुत सी हवा भर गयी तब गुब्बारा रस्सों को खींचने

लगा। जल्दी से दोनों भाई रस्सों में लटक गये। एक आदमी ने चाकू से रस्से काट दिये। गुब्बारा ऊपर उड़ने लगा। दोनों भाई भी उसके साथ उड़ने लगे। सूर्य की रोशनी में गुब्बारे के रंग-बिरंगे कागज चमक रहे थे। नीचे आकाश में यह दृश्य बहुत ही सुन्दर लग रहा था। लोग प्रसन्नता से तालियाँ बजा रहे थे।

जानते हो यह गुब्बारा कितना ऊँचा गया? यह लगभग नौ सौ मीटर की ऊँचाई तक गया और इसने लगभग दो किलोमीटर की यात्रा की। फिर यह नीचे उतर आया।

उधर लोगों ने एक और प्रयास किया। उन्होंने चिड़ियों की शक्ल का एक ढाँचा बनाया जो आज कल के हवाई जहाज से मिलता-जुलता था। इसमें कोई इंजन न था। पर यह हवा में उड़ सकता था। इसे ही आजकल ग्लाइडर कहते हैं।

अमरीका के एक नगर में दो भाई रहते थे - विल्बर राइट और आरविल राइट। उन्होंने जहाज का एक नमूना बनाया। यह था तो ग्लाइडर जैसा पर इसमें पेट्रोल से चलने वाला इंजन लगा था। एक दिन यह हवाई जहाज मैदान में खड़ा था और दोनों भाई झगड़ रहे थे। एक कहता - मैं पहले जाऊँगा और दूसरा कहता - मैं पहले जाऊँगा। आरविल ने एक सिक्का निकाला और हवा में उछाला। आरविल जीत गया।

आरविल दौड़ता हुआ हवाई जहाज में चढ़ गया। उसने हैंडल घुमाया और जोर-जोर से पैडल मारे। इंजन चलने लगा। हवाई जहाज ऊपर उड़ने लगा। हवाई जहाज के पीछे-पीछे भाग रहा था विल्बर।

कुछ लोग दूरी पर खड़े आश्चर्य से देख रहे थे। यह हवाई जहाज बारह सैकेण्ड ऊपर उड़ा। यह जमीन से केवल तीन मीटर ऊँचा उड़ा और इसने केवल छत्तीस मीटर की यात्रा की। फिर यह रेतीली भूमि पर नीचे आ गया। यही है मनुष्य की सबसे पहली उड़ान।

वे लोग सचमुच धन्य हैं जिन्होंने अपने परिश्रम तथा अनुसन्धान से मनुष्य के आकाश में उड़ने के स्वप्न को साकार किया।

अभ्यास - कार्य

पढ़ो और समझो

गति	=	चाल
अन्तरिक्ष	=	पृथ्वी और सूर्य, अन्य ग्रहों आदि के बीच का खाली स्थान
तीव्र	=	तेज
सराहनीय	=	प्रशंसा के योग्य, बड़ाई लायक
प्रसन्नता	=	खुशी
धन्य	=	प्रशंसनीय
परिश्रम	=	मेहनत
अनुसन्धान	=	खोज
स्वप्न को साकार करना	=	योजना को पूरा करना

सोचो और बताओ

(१) जोसफ और स्टीफन धुएँ के साथ राख को उड़ते देखकर क्यों प्रसन्न हुए ?

(२) जोसफ और स्टीफन ने कौन-कौन से प्रयोग किये ?

(३) विल्बर राइट और आरविल राइट क्यों झगड़ रहे थे?

(४) हवाई जहाज की तरह कौन-कौन सी चीजें आकाश में उड़ती हैं?

भाषा-कार्य

उदाहरण :

(१) 'ता' जोड़कर नया शब्द बनाओ-

प्रसन्न	=	प्रसन्नता	गम्भीर	=	....
नवीन	=	....	वीर	=	....
प्राचीन	=	....	उदार	=	...

(२) इन शब्दों को पढ़ो और समझो :

पुष्प	पुष्पक	वाष्प
स्टेशन	स्टीफन	स्टोव
ग्लाइडर	ग्लानि	ग्लोब
स्वामी	स्वप्न	स्वतन्त्र

(३) इन शब्दों को पढ़ो, समझो और लिखो -

प्रशंसा	प्रशंसनीय	आदर	आदरणीय
सराहना	सराहनीय	स्मरण	स्मरणीय
निन्दा	निन्दनीय	अनुकरण	अनुकरणीय

अध्यापन-संकेत

(१) निम्नलिखित शब्दों को बोलकर छात्रों को लिखवायें-

परिणाम	अन्तरिक्ष	सराहनीय	पुष्पक	तीव्र
संकट	प्रयास	ढाँचा	पैट्रोल	मनुष्य

(२) अलग-अलग प्रकार के हवाई जहाजों के चित्र इकट्ठाकर चार्ट में चिपकाने के लिए छात्रों को निर्देश दें।

पाठ-११

दोहा-दशक

कबीर

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।।

रूखा-सूखा खाइ के, ठंडा पानी पीउ।
देखि पराई चूपड़ी, मत ललचावे जीउ।।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल मे परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।

रहीम

रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

करत करत अभ्यास के, जड़ मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पानि।
कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजानि।।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाँट न लैहै कोय।।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

साँच	=	सच्चाई
अति	=	बहुत या अधिक
हिरदै	=	हृदय
औरन को	=	दूसरों को
सीतल	=	शीतल या ठंडा
परलै	=	प्रलय अर्थात् विनाश या मिट जाना
बहुरि	=	फिर
नीके	=	अच्छे
बेर	=	देर
उत्तम	=	अच्छा या अच्छी
प्रकृति	=	स्वभाव
कुसंग	=	बुरा साथ
भुजंग	=	साँप

भाषा-कार्य

(१) नीचे दिये गये शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखो-

जाके, ताके, चूप, औरन, आपहु, खाइके, पीउ, देखि, ललचावे, जीउ, काल्ह, करै, सो, होयगी, करैगो, हवै, दिनन, को, आइहैं, बनत, लगिहै, का, करि, सकत, रहत, करत-करत, होत, रसरी, आवत-जात, ते, परत, निसान, नहिं, खात, पियहिं, पानि, कहि, संचहिं, राखो, सुनि, इठलैहैं, लैहै, सुजानि।

(२) इन शब्दों के तत्सम रूप लिखो-

हिरदै, बानी, सीतल, परलै, व्यापत, सिल, तरुवर, सरवर, काज, संपति।

(३) कबीर के पहले दोहे को ध्यानपूर्वक पढ़ो। उसे उचित रूप से पढ़ने के लिए 'नहीं', 'पाप' और 'है' के बाद थोड़ी-थोड़ी देर रुकना पड़ता है। पद्य में जिन स्थानों पर इस प्रकार रुकना पड़ता है उन्हें 'यति' कहते हैं। अन्य दोहों के यति स्थान बताओ।

(४) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट करो-

(क) पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।

(ख) जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर।

(ग) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

अध्यापन-संकेत

(१) यति स्थानों का ध्यान रखते हुए दोहों को उचित रूप से पढ़कर सुनाइए और छात्रों को उसी प्रकार पढ़ने का निर्देश दीजिए।

(२) छात्रों को कबीर और रहीम के दोहों में से अपनी पसन्द के दोहे यादकर सुनाने को कहिए।

जड़मति	=	मूर्ख
सुजान	=	समझदार या जानकार
रसरी	=	रस्सी
सिल	=	शिला या पत्थर
तरुवर	=	पेड़
सरवर	=	तालाब
परकाज हित	=	दूसरों के काम के लिए
संपति	=	धन
संचहिं	=	इकट्ठा करते हैं
व्यथा	-	[illegible]
गोय	=	छिपाकर
इठलाना	=	हँसी उड़ाना

सोचो और बताओ :

(१) अधिक बोलना और अधिक चुप रहना दोनो ठीक नहीं है। ऐसा क्यों कहा गया है?

(२) कबीर ने किस तरह के बोलने को अच्छा बताया है?

(३) समय का पालन करने के लिए कबीर ने किस तरह काम करने की सीख दी है?

(४) काम को समय से पूरा न करने का क्या परिणाम होता है?

(५) रहीम ने बुरा समय आने पर धीरज रखने की सलाह क्यों दी है?

(६) अच्छे स्वभाव वाले मनुष्य का क्या लक्षण है?

(७) बुद्धिमान लोग किस तरह के कार्यों में अपना धन लगाते हैं?

(८) अपना कष्ट दूसरों को सुनाना क्यों अच्छा नहीं है?

पाठ-१२

देश के सजग प्रहरी

मातृभूमि के सम्मान तथा देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए भारतीय वीरों ने सदा प्राणों की बाजी लगायी है। ऐसे वीरों मे भारतीय वायु सेना के कीलर बन्धु डेनजिल और ट्रैवर का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

कीलर बन्धु लखनऊ के सेण्ट फ्रांसिस हाईस्कूल के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक चार्ल्स कीलर के पुत्र हैं। दोनों कीलर बन्धुओं ने इसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। डेनजिल और ट्रैवर जब मात्र छः-सात वर्ष के ही थे, तभी ये तेज से तेज घोड़ों की पीठ पर बिना जीन के सवारी करते थे। बचपन से ही साहसिक कार्यों और युद्ध की कहानियों में उनकी विशेष रुचि थी। १९५१ ई. में दोनों भाई भारतीय वायु सेना में भर्ती हो गये और अपनी कार्यकुशलता के कारण निरन्तर उन्नति करने लगे।

कीलर बन्धु नेट विमान चलाने में विशेष कुशल थे। नेट विमान हलका होता है और शीघ्र मुड़ सकता है। यह विमान पृथ्वी से कुछ ऊँचाई से ही शत्रु पक्ष के विमानों पर सफलतापूर्वक प्रहार कर सकता है।

घटना १९६५ ई. की है। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध चल रहा था। पाकिस्तान ने संयुक्त राज्य अमेरिका से सेबर जेट विमान प्राप्त कर लिये थे। वायु युद्ध के लिए ये उत्तम कोटि के विमान माने जाते हैं। पाकिस्तान को इन विमानों पर बड़ा गर्व था।

पर कीलर बन्धुओं ने अपने नेट विमानों की सहायता से वायु युद्ध में ऐसा कौशल दिखाया कि पाकिस्तानी वायु सेना का गर्व चूर-चूर हो गया।

भारत और पाकिस्तान की सीमाओं में अनेक मोर्चों पर युद्ध चल रहा था। छम्ब क्षेत्र में शत्रु पक्ष के विमान आकाश से भयंकर अग्नि वर्षा कर रहे थे। ट्रेवर कीलर स्क्वाड्रन लीडर के रूप में वहाँ युद्ध का मोर्चा सँभाले हुए थे। उन्हें पाकिस्तानी वायु सेना के सेबर जेट विमानों के आक्रमण का सामना करना पड़ा।

ऐसी स्थिति में ट्रेवर कीलर ने अद्भुत रणकौशल का परिचय दिया। अपने चार नेट विमानों के दल के साथ वे शत्रु पक्ष के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए आगे बढ़े। अपनी युद्ध कला की सहायता से वे शत्रु पक्ष के सेबर जेटों को इच्छित ऊँचाई तक ले आने में सफल रहे। ज्यों ही सेबर जेट निशाने की परिधि में आये, उन्होंने तुरन्त एक गोली दाग दी। निशाना अचूक सिद्ध हुआ। सेबर जेट ध्वस्त होकर लुढ़कता हुआ भूमि पर गिर पड़ा। यह पहला सेबर जेट था, जिसे ट्रेवर के नन्हें से नेट ने धराशायी कर दिया था।

ट्रेवर कीलर की इस वीरता से दूसरे हवाबाजों का भी हौसला बढ़ गया। भारतीय स्थल सेना के कुछ जवानों ने एक विमान को तोप से ही मार गिराया। बस फिर क्या था, भारतीय वीरों ने शत्रु पक्ष के सेबर जेटों की डटकर खबर लीं। अपने विमानों की दुर्गति देखकर पाकिस्तानी हवाबाजों का मनोबल गिर गया।

युद्ध के एक अन्य मोर्चे कसूर क्षेत्र में स्क्वाड्रन लीडर डेनजिल कीलर डटे हुए थे। जैसे ही शत्रु के सेबर जेट विमान कसूर क्षेत्र में

प्रविष्ट हुए, डेनजिल कीलर ने फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कपिल को प्रहार करने का आदेश दिया। कपिल ने गोली दागी और जेट धराशायी हो गया। इतने में ही शत्रु पक्ष का दूसरा जेट कपिल के पीछे आ गया। डेनजिल ने जैसें ही उसे देखा, वे तुरन्त उसका पीछा करने लगे। उन्होंने लगभग छः सौ मीटर की दूरी से उस पर गोलियों की झड़ी लगा दी। जेट ध्वस्त होकर नीचे गिर पड़ा। इस प्रकार डेनजिल और उनके सहयोगियों ने आकाश के युद्ध में शत्रु पक्ष की कमर तोड़ दी।

भारतीय वायु सेनाध्यक्ष ने कीलर बन्धुओं के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उनके पिता चार्ल्स कीलर को बधाई दी। उन्होंने पत्र में लिखा कि सुयोग्य पिता के इन वीर पुत्रों ने जिस साहस और निर्भीकता से युद्ध करके देश का सम्मान बढ़ाया है, उस पर सभी भारतवासियों को गर्व है।

कानपुर नगर के निवासियों ने कीलर बन्धुओं को उनके साहस तथा शौर्य के लिए उपहार स्वरूप कुछ भूमि देने की इच्छा प्रकट की। कीलर बन्धुओं ने उनकी भावना का सम्मान करते हुए उपहार को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि हमारा घर तो मोर्चे पर है। हमें और कहीं रहने के लिए जमीन नहीं चाहिए।

कुछ समय पहले की एक अन्य घटना से भी हमें डेनजिल के साहस, शौर्य तथा कौशल का परिचय मिलता है। उनके वायुयान की छतरी (कनोपी) टूट गयी थी, फिर भी वे बड़े धैर्य तथा साहस के साथ अपने वायुयान को पृथ्वी पर सुरक्षित उतार लाये। इस साहसिक कार्य के लिए भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें अति विशिष्ट सेवा मेडल

प्रदान कर पुरस्कृत किया।

अपने देश के प्रति कीलर बन्धुओं की सेवा तथा समर्पण की भावना सभी भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। धन्य हैं ऐसे वीर जो मातृभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर समझते हैं और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणों को हथेली पर लिये रहते हैं। देश के ऐसे सजग प्रहरियों को हमारा कोटि-कोटि प्रणाम।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

साहसिक	=	साहसपूर्ण
कार्यकुशलता	=	काम करने की निपुणता
प्रतिरोध	=	मुकाबला
इच्छित	=	चाही हुई
अचूक	=	न चूकने वाला
ध्वस्त होना	=	नष्ट होना
धराशायी कर देना	=	मार कर गिरा देना
दुर्गति	=	बुरी दशा
मनोबल	=	हौसला
शौर्य	=	वीरता
निर्भीकता	=	निडरता
पुरस्कृत करना	=	इनाम देना
स्क्वाड्रन लीडर	=	वायु सेना की टुकड़ी का नेता

सोचो और बताओ

(१) बचपन की किस बात से कीलर बन्धुओं के साहस का पता चलता है?

(२) छम्ब मोर्चे पर भारतीय वीर किस बात से उत्साहित हुए?

(३) कसूर क्षेत्र में डेनजिल कीलर ने किस प्रकार अपनी वीरता का परिचय दिया?

(४) कीलर बन्धुओं ने भूमि के उपहार को क्यों नहीं स्वीकार किया?

(५) डेनजिल कीलर को राष्ट्रपति ने क्यों पुरस्कृत किया?

भाषा कार्य

(क) दुर्गति = दुर् + गति

दुर्दशा = ...

दुर्जन = ...

(ख) मनोबल = मनः + बल

मनोहर = ...

(ग) युद्ध-कला = युद्ध की कला

अग्नि-वर्षा = ...

स्वतंत्रता-संग्राम= . . . .

(२) नीचे दिये गये मुहावरों का अर्थ बताओ तथा उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो:

प्राणों की बाजी लगाना, गर्व चूर-चूर होना, कमर तोड़ देना।

अध्यापन-संकेत

(क) नीचे दिये गये शब्दों का उच्चारण-अभ्यास करायें-

मातृभूमि, ट्रेवर, चार्ल्स, सेण्ट फ्रांसिस, प्रधानाध्यापक, पृथ्वी, स्क्वाड्रन-लीडर, शौर्य, फ्लाइट लेफ्टिनेंट।

(२) छात्रों को कीलर बन्धुओं की वीरता के बारे में सात-आठ वाक्य लिखने का निर्देश दें।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

बंगाल के एक स्टेशन पर रेलगाड़ी आकर रुकी। गाड़ी रुकते ही एक सूट-बूट धारी युवक नीचे उतरा। युवक ने इधर-उधर देखते हुए 'कुली-कुली' की आवाज लगायी। उस छोटे स्टेशन पर एक भी कुली न था। युवक बहुत परेशान था।

इसी समय एक व्यक्ति आया। युवक ने उस व्यक्ति से पूछा-क्या यहाँ कोई कुली नहीं है। मैं कुली के बिना देर से परेशान हूँ। उस व्यक्ति ने कहा - चलिए मैं आपका सामान पहुँचा दूँगा। फिर वह व्यक्ति सिर पर सामान रखकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। युवक उस व्यक्ति को अपने घर तक ले गया। घर पहुँचने पर जब उसने उस व्यक्ति को मजदूरी देने के लिए पैसे निकाले तो उसने 'धन्यवाद' कहकर पैसे लेने से इनकार कर दिया।

युवक को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह कुछ सोच ही रहा था कि उसी समय उसका बड़ा भाई आ गया। उसने उस व्यक्ति को आदरपूर्वक प्रणाम करते हुए पूछा - अरे आप विद्यासागर जी यहाँ कैसे ? आइए, बैठिए न, खड़े क्यों हैं ? युवक को अब समझने में देर नहीं लगी कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है बल्कि स्वयं ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ही हैं। वह लज्जित होकर तुरन्त उनके चरणों पर गिर पड़ा और बोला, "श्रीमन्, मुझे क्षमा कर दें, मैं आपको पहचान न सका। मुझसे बड़ी भूल हुई।" उस व्यक्ति ने युवक को गले लगाते हुए कहा, 'इसमे क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं। हमारा देश बहुत गरीब है, हमे अपना काम अपने हाथों से ही करना चाहिए।"

यह महान व्यक्ति कोई और नहीं, वरन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ही थे।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जन्म सन् १८२० ई. में बंगाल के वीरा सिंह गाँव (जिला मिदनापुर) में हुआ था। इनकी माता का नाम भगवती देवी और पिता का नाम ठाकुर दास वन्द्योपाध्याय था।

ईश्वरचन्द्र बड़े चंचल स्वभाव और तीक्ष्ण बुद्धि के बालक थे। उन दिनों पढ़ाई-लिखाई की आज जैसी सुविधा नहीं थी। गाँव की पाठशाला में वर्णमाला तथा गणित का साधारण ज्ञान कराया जाता था। आगे की शिक्षा के लिए बच्चों को दूर शहर मे जाना पड़ता था।

ईश्वरचन्द्र जब पाँच वर्ष के हुए, उनके पिता उन्हें लेकर गाँव की

पाठशाला में पहुँचे। नाम लिखाकर वे घर वापस आ गये।

पहले दिन की पढ़ाई आरम्भ हुई। कुछ बंगला अक्षरों को लिखाकर अध्यापक ने कहा, "बस, आज इनका अभ्यास करो, आगे फिर बतायेंगे।" ईश्वरचन्द्र को उन थोड़े अक्षरों में सन्तोष न हुआ। वे दूसरे बच्चों के पास गये। बच्चे बड़े खुश हुए। उन्होंने अपनी पुस्तकें खोलकर इन नये साथी को पूरे बंगला अक्षर दिखाये। ईश्वरचन्द्र ने एक बार में ही बंगला के सभी अक्षरों को लिख डाला। पाठशाला बन्द होने पर उन्हें पूरी वर्णमाला अच्छी तरह याद हो गयी।

अध्यापक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पाठाशाला बन्द होने पर वे ईश्वरचन्द्र के साथ उनके घर पहुँचे। ठाकुरदास ने समझा - शायद ईश्वरचन्द्र ने कुछ शरारत की है। तब तक अध्यापक स्वयं बोल पड़े "ठाकुरदास जी, आपका बेटा बहुत ही होनहार और प्रतिभावान है। एक ही दिन में इसने पूरी वर्णमाला सीख ली।" ठाकुरदास को विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा "अरे महाशय! यह कैसे हो सकता है?" पर जब एक-एक अक्षर लिखने को कहा गया तो ईश्वरचन्द्र नें सारे अक्षरों को सही-सही लिख दिया और उन्हें पढ़कर सुना भी दिया।

पाठशाला की पढ़ाई पूरी कर नौ वर्ष की अवस्था में उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा। उस समय भी एक विचित्र बात हुई। ईश्वरचन्द्र अपने पिता के साथ पैदल ही जा रहे थे। सड़क पर जगह-जगह छोटे-बड़े पत्थर गड़े हुए थे। ईश्वरचन्द्र ने सहज ही पूछा, "पिता जी ये पत्थर क्यों गड़े हैं?" पिता ने बताया, "ये मील के पत्थर हैं, इनसे शहर की दूरी का पता लगता है। सामने के पत्थर पर अंग्रेजी के पन्द्रह

का अंक लिखा है। इसका मतलब यह हुआ कि कलकत्ता अभी पन्द्रह मील दूर है।''

फिर क्या था, कलकत्ता पहुँचते-पहुँचते, उन पत्थरों पर लिखे अंकों को देखकर ईश्वरचन्द्र ने अंग्रेजी के सभी अंक सीख लिये।

आगे चलकर इन्होंने संस्कृत की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अध्ययन समाप्त करते ही ईश्वरचन्द्र को फोर्ट विलियम कालेज के बंगाली विभाग में मुख्य पंडित पद पर नियुक्ति मिल गयी। उस समय कालेज के सचिव कैप्टन मार्शल थे। उनकी सलाह पर ईश्वरचन्द्र ने अंग्रेजी और हिन्दी का विस्तृत अध्ययन किया। उनकी विद्वत्ता और पांडित्य के कारण उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि दी गयी। बाद में उन्हें निरीक्षक का पद भी दे दिया गया। विद्यालय में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने अनेक सुधार किये। उस समय संस्कृत कालेज में प्रवेश के लिए जाति-पाँति पर बहुत ध्यान दिया जाता था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने उसे समाप्त कर सभी जातियों के लोगों को प्रवेश देने का निर्णय लिया। उनका बहुत विरोध हुआ पर वे अपने निर्णय पर अड़े रहे।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर निर्धन छात्रों की हर प्रकार सहायता करते थे। बहुत से छात्रों का खर्च वे स्वयं उठाते थे। लड़कियों की शिक्षा पर उनका विशेष ध्यान था। वे चाहते थे कि जिस प्रकार लड़कों को शिक्षा दी जाती है उसी प्रकार लड़कियों को भी शिक्षा दी जाय। इसके लिए उन्होंने बहुत से बालिका विद्यालय खुलवाये। विद्यालयों में खेलकूद के समान दिलवाये और पुस्तकालयों की स्थापना करवायी।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर बहुत बड़े समाज सुधारक भी थे। निर्धनों और असहायों की सेवा में उन्हें बड़ा सुख मिलता था। समाज में महिलाओं की भलाई के लिए उन्होंने अनेक कार्य किये। विधवा विवाह के वे प्रबल समर्थक थे। अपने पुत्र का विवाह उन्होंने एक विधवा से ही कराया। उनके प्रयास से ही विधवा-विवाह का कानून बनाया गया।

विद्यासागर एक अच्छे साहित्यकार भी थे। उन्होंनें अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत में अनेक पुस्तकों की रचना की।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर बड़े सरल किन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति थे। एक बार एक अंग्रेज अफसर ने उन्हें अपने घर बुलाया। उस समय वह मेज पर अपने पैर फैलाये बैठा था। उसने विद्यासागर से न बैठने के लिए कहा और न मेज से पैर ही हटाये। विद्यासागर को बहुत बुरा लगा। वे शीघ्र ही बात समाप्त कर वापस आ गये। कुछ दिनों बाद उस अंग्रेज को किसी काम से विद्यासागर के पास आना पड़ा। अपने अपमान का बदला लेने का अब उन्हें भी अवसर मिल गया। उसके आते ही विद्यासागर अपने कमरे में मेज पर पाँव फैलाकर बैठ गये। अंग्रेज अफसर को एक हिन्दुस्तानी के इस व्यवहार से बड़ी ठेस लगी। उसने इसकी शिकायत की। विद्यासागर से पूछा गया तो उन्होंने साफ-साफ कह दिया, ''इसके पहले एक दिन मैं इन महाशय से मिलने गया था। उस समय ये मेज पर पैर फैलाये बैठे थे। इन्होंने मुझे बैठने के लिये भी न कहा। पहले तो मुझे इनके इस व्यवहार से बड़ा कष्ट हुआ किन्तु बाद में समझा कि शायद यह अंग्रेजी सभ्यता का ही एक अंग है। इनके आने पर मैंने भी वैसा

करने का प्रयास किया।''

अब अंग्रेजों को सच्चाई समझने में देर न लगी। उन्होंने मामले को वहीं रफा-दफा कर दिया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महान विद्वान, समाज सेवी, उदार एवं स्वाभिमानी महापुरुष थे। सन् १८९१ ई. में उनका देहावसान हो गया। वे सचमुच विद्यासागर ही नहीं वरन् कर्मसागर भी थे।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

आश्चर्य	=	अचरज
तीक्ष्ण	=	तीव्र, तेज, प्रखर
प्रतिभावान	=	जिसमें प्रतिभा हो
विचित्र	=	अनोखा
असहाय	=	बेसहारा
स्वाभिमानी	=	अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का ध्यान रखने वाला
रफा-दफा करना	=	समाप्त करना, निपटारा करना
देहावसान	=	मृत्यु
कर्मसागर	=	अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाला।

सोचो और बताओ

(१) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जन्म कहाँ हुआ था?।

(२) युवक ने ईश्वरचन्द्र को कैसे समझा कि वे कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं?

(३) बालक ईश्वरचन्द्र के साथ अध्यापक घर क्यों गये?

(४) ईश्वरचन्द्र की प्रतिभा को प्रकट करने वाली किसी एक घटना का वर्णन करो।

(५) ईश्वरचन्द्र ने नारियों की दशा सुधारने के लिए कौन से कार्य किये?

(६) ईश्वरचन्द्र का देहावसान कब हुआ?

भाषा-कार्य

१- 'निर्धन' शब्द 'निः + धन' से बना है। इसी प्रकार 'निः' लगाकर कोई अन्य चार शब्द बनाओ।

२- 'प्रतिभावान' शब्द 'प्रतिभा + वान' से बना है। 'प्रतिभा' संज्ञा है इसमें 'वान' शब्द लग जाने से यह विशेषण अर्थात् विशेषता बताने वाला हो जाता है। इसी प्रकार बुद्धि + मान से 'बुद्धिमान' विशेषण शब्द बनता है। नीचे लिखे शब्दों में वान अथवा मान लगाकर विशेषण शब्द बनाओ-

चरित्र = ...

धन = ...

गति = ...

दया = ...

गुण = ...

३- 'मान' के पहले 'अप' जोड़ देने से 'अपमान' शब्द बनता है। 'अपमान' शब्द 'मान' का विलोम अर्थ देता है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के पूर्व 'अप' जोड़कर उसका विलोम बनाओ-

कीर्ति =

यश =

व्यय =

४- रिक्त स्थान की पूर्ति करो-

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जन्म सन् . . . . .ई. में बंगाल के . . . .(जिला . . . .) में हुआ था। इनकी माता का नाम . . . . और पिता का नाम . . . . था।

५- पाठ में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के लिए जिन विशेषणों का प्रयोग किया गया है, उन्हें अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखो।

६- नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण करो।

ईश्वरचन्द्र, वन्द्योपाध्याय, पाठशाला,

प्रतिभावान, स्वाभिमानी, आश्चर्य,

विस्तृत, पांडित्य, विद्वत्ता

अध्यापन-संकेत

विद्यासागर की ही तरह के दो अन्य महापुरुषों के बारे मे छात्रों को बतायें।

पाठ-१४

कृष्ण की बाल -लीला

मैया मैं तो चन्द खिलौना लैहों।
जैहौं लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहौं।
सुरभी को पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं।
ह्वैहौं, पूत नन्द बाबा को, तेरो सुत न कहैहौं।
आगे आउ बात सुन मेरी, बलदेवहिं न जनैहौ।
हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नयी दुलहिया दैहौं।
तेरी सौं, मेरी सुन मैया, अबहिं बियाहन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं।

अभ्यास-कार्य

पढ़ो और समझो

चन्द	=	चन्द्रमा
धरनि	=	पृथ्वी
सुरभि	=	गाय
पय	=	दूध
सुत	=	पुत्र
कुटिल	=	टेढ़े, शरारत भरे
सुमंगल	=	शुभ

सोचो और बताओ

(१) कृष्ण माता यशोदा से क्या माँग रहे हैं?

(२) खिलौना न पाने पर कृष्ण क्या करने की धमकी दे रहे हैं

(३) माता यशोदा उन्हें क्या कहकर मना रही हैं?

(४) बलदेव कौन थे?

भाषा-कार्य

१- नीचे लिखे शब्दों को समझकर उनके लिए अलग शब्द लिखो-

मैया	=	माँ
लैहौं	=	लूँगा
लोटि जैहौं	=	लोट जाऊँगा
करिहौं	-	....
कहैहौं	=	....
दैहौं	=	....
गैहौं	=	....
आउ	=	....

२- नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा करो-

सूरदास ह्वै कुटिल बराती . . . . .गैहौं।

३- पद याद करो और कक्षा में सुनाओ।

अध्यापन-संकेत

१. कविता कंठस्थ करायें तथा कक्षा में बच्चों से कहलवायें। ब्रजभाषा के शब्दों के खड़ी बोली के रूप समझायें।

२. कृष्ण के बारे में छात्रों को संक्षेप में बतायें।

पाठ-१५

भाग्य और बुद्धि

एक बार बुद्धि और भाग्य में बहस छिड़ गयी। बुद्धि कहती, "मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ" भाग्य कहता, "मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ।" दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार न था। इतने में एक गड़रिया अपनी भेड़ों को लेकर निकला। भाग्य और बुद्धि ने देखा। वह मस्त चाल से चलता हुआ बाँसुरी बजा रहा था और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चल रही थीं।

गड़रिये के कुछ दूर जाते ही बुद्धि भाग्य से बोली, 'तुम्हें अपने पर इतना गर्व है तो इस गड़रिये को सम्राट बना दो। मैं अपनी हार मान लूँगी।"

"वाह! यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। मैं इसे कुछ ही दिनों

में सम्राट बना दूँगी। मेरा काम है राजा को रंक बनाना और रंक को राजा।'' भाग्य ने बुद्धि की चुनौती स्वीकार कर ली।

गड़रिया कुछ ही आगे बढ़ा तो उसे हीरे-जवाहर से जड़ी जूतियाँ दिखायी दीं। उसने उन्हें पहन लिया, फिर वह बाँसुरी बजाने में मस्त हो गया। दोपहर को एक पेड़ की घनी छाया में बैठ उसने भुने चने खाये और फिर विश्राम करने लगा।

तभी वहाँ से एक विदेशी व्यापारी निकला। उसने गड़रिये के पाँव में इतनी बहुमूल्य जूतियाँ देखीं तो उसे लालच आ गया। उसने अपने नौकरों को वहीं ठहरने के लिए कहा और स्वयं गड़रिये से बातचीत करने लगा। गड़रिये ने बड़ी प्रसन्नता से हीरे-जवाहर से जड़ी जूतियाँ एक बोरी चने के बदले में दे दीं।'' व्यापारी जूतियाँ लेते ही वहाँ से चल पड़ा। बुद्धि यह देखकर हँसने लगी।

व्यापारी ने वे जूतियाँ बादशाह को भेंट कीं। बादशाह उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने व्यापारी से पूछा कि तुम्हे ये जूतियाँ कहाँ से मिली हैं।

व्यापारी सच्ची बात बताना नहीं चाहता था। उसने कहा कि ये जूतियाँ मुझे हिन्दुस्तान के राजकुमार ने भेंट की हैं। मैंने इन्हें आपके ही योग्य समझा और इन्हें आपको भेंट कर दिया।

बादशाह ने सोचा कि इतने समृद्ध देश के राजकुमार से अपनी बेटी का विवाह करना ठीक रहेगा। उन्होंने व्यापारी से अपने मन की बात बतायी और तुरन्त हिन्दुस्तान जाने को कहा।

व्यापारी रास्ते भर सोचता आया - गड़रिया देखने में सुन्दर लगता

है। राजसी वस्त्र-आभूषणों से सज्जित होने पर वह राजकुमार-सा लगेगा। शाहजादी से विवाह करने के बाद देश का राज्य गड़रिये को मिल जायेगा क्योंकि बादशाह के कोई पुत्र नहीं है। इस प्रकार मुझे भी कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होगा। बस, फिर क्या था? व्यापारी ने कुछ विश्वस्त सेवकों को अपनी योजना समझायी। फिर वह गड़रिये के पास पहुँचा। वह वैसी ही दूसरी जूतियाँ पहने अपनी भेड़े हाँक रहा था। व्यापारी को देखते ही गड़रिया बोला, "क्या मेरी जूतियाँ खरीदोगे?"

व्यापारी हँसकर बोला, "अवश्य।" उसने अपने सेवकों को संकेत किया और वे गड़रिये को पकड़कर ले गये। थोड़ी ही देर में उसे राजसी वस्त्र-आभूषणों से सज्जित कर व्यापारी के पास ले आये। गड़रिया चीख-चिल्ला रहा था कि मुझे न जाने कैसे भारी-भारी वस्त्र-आभूषण पहना दिये गये हैं और मेरी भेड़ें भी न जाने कहाँ भाग गयी हैं।

व्यापारी ने उसे डाँटा, "चुप रहो। हम तुम्हें बादशाह बनाने ले जा रहे हैं। ज्यादा शोर मचाया तो मार डाले जाओगे।"

बुद्धि यह देखकर हँसने लगी। पर भाग्य ने कहा, 'हँसती क्यों हो? यह तो सम्राट बनने ही वाला है"

बादशाह ने कुछ ही दिनों में बड़ी धूमधाम से गड़रिये के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया। गड़रिया बहुत घबराया हुआ था। उसकी समझ में कुछ न आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। रात होते ही उसने खिड़की से कूदकर भागने की ठानी। खिड़की

बहुत ऊँची थी और गड़रिये की मृत्यु निश्चित थी। वह जैसे ही कूदने लगा, बुद्धि चिल्ला उठी, ''भाग्य! भाग्य! तुम्हारा सम्राट मौत के मुँह में जा रहा है।''

भाग्य ने खीझकर कहा, ''कैसे मूर्ख से पाला पड़ा है! अच्छा, तुम इसे सम्राट बना दो तो मैं हार मान लूँगा।''

बुद्धि उसी क्षण गड़रिये के मस्तिष्क में प्रवेश कर गयी। गड़रिया खिड़की से नीचे झाँककर सोचने लगा - यह खिड़की तो बहुत ऊँची है। यहाँ से गिरने पर तो मेरे प्राण निकल जायेंगे। क्यों न शाहजादी का पति ही बना रहूँ?

गड़रिया शाहजादी के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा। शाहजादी को उसका बाँसुरी बजाना बहुत अच्छा लगता था। गड़रिया धीरे-धीरे राजकाज में भी निपुण होता गया। बादशाह ने उसे सब प्रकार से योग्य जानकर अपना राज्य सौंप दिया।

बुद्धि भाग्य पर हँसती हुई अपनी राह चली गयी।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

भाग्य	=	तकदीर
श्रेष्ठ	=	अच्छा
सम्राट	=	बड़ा राजा
रंक	=	गरीब
विश्राम	=	आराम
बहुमूल्य	=	अधिक कीमत वाला

समृद्ध	=	धनी, सम्पन्न
विश्वस्त	=	भरोसा करने योग्य
आभूषण	=	गहना
निपुण	=	चतुर

सोचो और बताओ

(१) भाग्य और बुद्धि में किस बात पर बहस हो रही थी ?

(२) गड़रिया एक बोरी चने के बदले मे हीरे-जवाहर से जड़ी जूतियाँ व्यापारी को देने को क्यों तैयार हो गया ?

(३) व्यापारी ने बहुमूल्य जूतियाँ बादशाह को क्यों भेंट की ?

(४) व्यापारी गड़रिये की शादी शाहजादी से करवाने को क्यों तैयार हो गया ?

(५) गड़रिया राजमहल की खिड़की से क्यों कूदना चाहता था ?

(६) भाग्य ने क्यों हार मान ली ?

भाषा-कार्य

(१) शब्दों को मिलाकर लिखो -

उदाहरण :

वस्त्र और आभूषण	=	वस्त्र-आभूषण
हीरे और जवाहर	=	. . . .
राजा और रंक	=	. . . .
स्त्री और पुरुष	=	. . . .
बालक और बालिकाएँ	=	. . . .

(२) 'पूर्वक' जोड़कर नया शब्द बनाओ -

उदाहरण :

प्रसन्नता	=	प्रसन्नतापूर्वक

शान्ति = ...

सुख = ...

प्रेम = ...

(३) मुहावरों के अर्थ बताओ-

हार मान लेना, मौत के मुँह में जाना, प्राण निकल जाना, बायें हाथ का खेल।

(४) समानार्थक शब्द बताओ-

नौकर, राजा, मौत, आभूषण, वस्त्र, निपुण

अध्यापन-संकेत

(१) नीचे दिये गये शब्दों को बोलकर छात्रों को लिखवायें:

मस्तिष्क, शाहजादी, सम्राट, वस्त्र-आभूषण, समृद्ध, मृत्यु, बहुमूल्य, व्यापारी।

(२) छात्रों को कहानी अपने शब्दों में सुनाने का निर्देश दें।

पाठ - १६

गाँव और शहर

आधी रात बीत चुकी थी। गाँव से शहर की ओर जाने वाली सड़क पर पैदल यात्रियों तथा सवारियों का आना जाना रुक गया था। एक छोर पर शहर बिजली के प्रकाश से जगमगा रहा था और दूसरे छोर पर गाँव के निकटवर्ती बाग-बगीचों और खेतों से आने वाली शीतल मन्द हवा बह रही थी। गाँव और शहर दोनों को अपने-अपने गुणों पर गर्व था। अचानक सड़क पर भेंट होते ही दोनों में विवाद छिड़ गया।
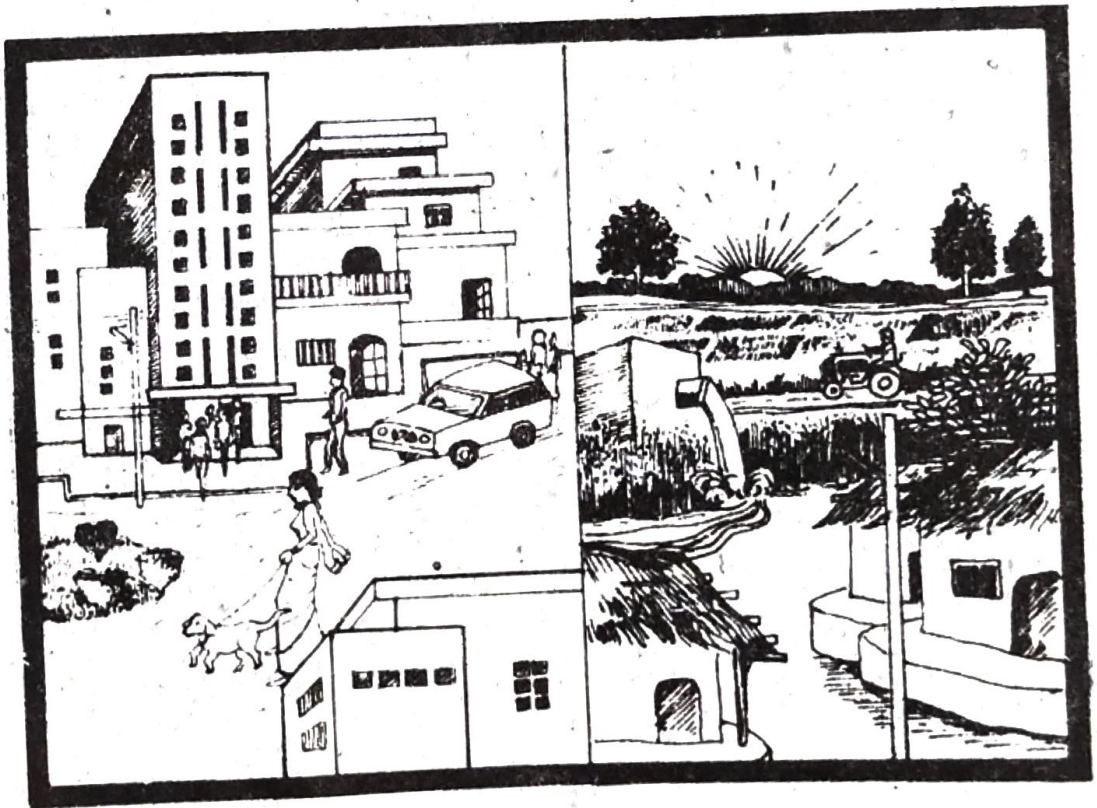
शहर : कहो भाई गाँव, तुम्हारे क्या हाल-चाल हैं।

गाँव : शायद तुम मेरे क्षेत्र में रहने वाले लोगों के बारे में जानना चाहते हो। ग्रामवासियों को सूर्य का खुला प्रकाश, स्वच्छ

शीतल हवा और चारों ओर का हरा-भरा वातावरण सहज सुलभ रहता है। इसलिए उनके तन-मन स्वस्थ रहते हैं और वे सुखमय तथा आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।

शहर : तुम्हारे यहाँ दिन में सूर्य का प्रकाश सुलभ है तो वह मेरे यहाँ दुर्लभ नहीं है किन्तु रात में अँधेरे में ही डूबे रहते हो। गाँव के घरों में टिमटिमाती रोशनी कहीं दिखाई पड़ जाती है। मेरे यहाँ तो घर और सड़के रात में बिजली के प्रकाश में जगमगाते रहते हैं।

गाँव : तुम्हारे मुहल्लों में सटे हुए कई-कई मंजिलों वाले मकानों को सूर्य का प्रकाश और स्वच्छ वायु दुर्लभ रहती है। अनेक घरों के लोग धूप के लिए तरसते रहते हैं। कुछ घरों के लोग तो घंटे-दो-घंटे के लिए ही सूर्य देव के दर्शन कर पाते हैं। गाँव में लोग लालटेन और दीये जलाकर प्रकाश पा लेते हैं और अब तो वहाँ भी बिजली पहुँच रही है। बहुत से गाँवों में शहर की तरह ही बिजली का प्रयोग होने लगा है।

शहर : तुम सूर्य के प्रकाश और स्वच्छ हवा को इतना महत्त्व दे रहे हो कि अन्य सुविधाओं की तुम्हें कोई चिन्ता ही नहीं है।

गाँव : शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए सूर्य के प्रकाश, स्वच्छ खुली हवा, हरे-भरे वातावरण आदि का बहुत अधिक महत्त्व है। पौष्टिक आहार भी बहुत आवश्यक है। दूध, दही, घी, हरी सब्जी, ताजे फल, खाने का शुद्ध तेल, गुड़,

ईख, आदि के मेल से भोजन पौष्टिक बनता है। ये सभी वस्तुएँ गाँव में शुद्ध, सस्ती और सरलता से प्राप्त हो जाती हैं।

शहर : गाँवों तक आने जाने के लिए न तो पक्की सड़कें हैं और न रेलगाड़ी या बस जैसी तेज सवारियों की सुविधा उपलब्ध है। मेरे यहाँ आने-जाने और सामान पहुँचाने की अच्छी सुविधाएँ सुलभ होने से जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ बाहर से आ जाती हैं। भोजन, वस्त्र, भवन-निर्माण की सामग्री तथा दैनिक जीवन में काम आने वाली सभी वस्तुएँ नगर-निवासियों को सुलभ रहती हैं। शिक्षा के लिए अच्छे विद्यालय, कालेज तथा चिकित्सा की अच्छी सुविधा के लिए चिकित्सालय भी यहाँ उपलब्ध हैं।

गाँव : तुम तो अपनी ऐसी बड़ाई कर रहे हो मानो तुम्हारे क्षेत्र के निवासी सदा चैन की बंशी बजाते हों। क्या तुम्हारे यहाँ दैनिक जीवन के उपयोग की सभी वस्तुएँ लोगों को सरलता से उपलब्ध हो पाती हैं? चाहे मिट्टी का तेल खरीदना हो या चीनी अथवा अनाज, लोगों को घंटों पंक्ति में खड़े रहकर प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

शहर : तुम्हारे यहाँ अनाज, फल, सब्जी, दूध, घी आदि सुलभ होने की बात तो सही है किन्तु शिक्षा, चिकित्सा, आने जाने के साधनों की कठिनाई का तो लोगों को सामना करना ही पड़ता है।

गाँव : भोजन आदि की वस्तुओं का तो उत्पादन गाँव के निवासी ही करते हैं, इसलिए ये मेरे यहाँ सहज सुलभ हैं। इनके अतिरिक्त अब अन्य सुविधाओं का भी ग्रामीण क्षेत्र में विस्तार हो रहा है। अब तो गाँवों तक आने-जाने के लिए पक्की सड़के बनती आ रही हैं और बसों आदि की सुविधाएँ बढ़ गयी हैं। गाँव-गाँव में स्कूल खुल गये हैं और थोड़ी-थोड़ी दूरी पर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों तथा अस्पतालों में स्वास्थ्य-रक्षा और चिकित्सा की सुविधाएँ सुलभ हो गयी हैं।

शहर : तुम्हारा यह कथन सही है गाँव में भोजन, आवास आदि सुलभ कराने की समस्या इतनी जटिल नहीं है जितनी मेरे यहाँ है। राशन की दुकानों या रेलवे अथवा बस स्टेशन में टिकट घरों के सामने पंक्तियों में घंटों खड़े रहने की बात भी सही है पर इसके कुछ विशेष कारण हैं।

गाँव : आखिर वे कौन-से कारण हैं ?

शहर : गाँव के निवासियों की तुलना में शहर के निवासियों की संख्या कहीं अधिक है। गाँव के बहुत से बेरोजगार लोग नौकरी की तलाश में लगातार शहर आते रहते हैं और यहीं रहने लगते हैं। शहर में पहले से बसी जनसंख्या में भी निरन्तर वृद्धि होती जाती है। बढ़ी जनसंख्या को उचित आवास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की सुविधाएँ सुलभ कराना कठिन हो जाता है। मिलों, कारखानों, इंजनों आदि के धुएँ से वायु प्रदूषण तो होता ही रहता है, जनसंख्या बढ़ने के कारण जल और भूमि प्रदूषण की संभावना बढ़ जाती है।

इससे स्वच्छता रख पाने की समस्या जटिल हो जाती है।

गाँव : जनसंख्या वृद्धि के कारण गाँव के लोगों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परिवारों में सदस्यों की संख्या तो बढ़ती जाती है किन्तु कृषि योग्य भूमि का क्षेत्र निश्चित है। परिवार के क्रमशः बढ़ते आकार के साथ-साथ खेतों का आकार छोटा होता जाता है। परिवारों के सदस्यों की संख्या बढ़ने से सबको घर में आवास की समुचित सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है। गाँव की तुलना में शहर का आकार जितना बड़ा है, उसी के अनुसार वहाँ समस्याएँ भी बड़ी और अधिक हैं। आज के शहर भी तो प्रारम्भ में छोटी बस्ती के रूप में गाँव ही रहे होंगे। इस दृष्टि से तो मैं तुम्हारा पूर्वज हूँ।

शहर : हाँ प्रारम्भ में तो सभी शहरों का आकार गाँव जैसा छोटा रहा होगा किन्तु धीरे-धीरे उनका विस्तार होता गया है। एक बात अवश्य सही है कि शहर में जीवन की सभी सुख-सुविधाओं की अच्छी व्यवस्था रहती है। घनी आबादी वाले मुहल्लों में स्वच्छता बनाये रखने के लिए विशेष ध्यान देना पड़ता है।

गाँव : अब तो गाँवों में भी शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, यात्रा, आदि की सुविधाओं का विस्तार होता जा रहा है। तुम्हारे बढ़ते हुए आकार से अवश्य ही मुझे विशेष चिन्ता है। नगर निवासियों की बढ़ती जनसंख्या को आवास सुलभ कराने के लिए तुम मेरे क्षेत्र की कृषि योग्य भूमि को भी अपने में समेटते जा रहे हो। इससे कृषि की उपज का क्षेत्र घटेगा जिसका परिणाम

शहर और गाँव दोनों के निवासियों को भोगना पड़ेगा।

शहर : हमारी अब तक की बातचीत से यह स्पष्ट है कि शहर के निवासियों को भोजन-सामग्री गाँव से ही प्राप्त होती है। साथ ही यह भी सही है कि ग्रामवासियों को कपड़ा, चीनी, लोहा, मसाले, आदि शहर से प्राप्त होते हैं। अब गाँवों और शहरों दोनों में जीवन की आवश्यक सुविधाओं का विस्तार होता जा रहा है। हम दोनों के क्षेत्रों के निवासी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़ी सीमा तक एक दूसरे पर निर्भर हैं।

गाँव और शहर का संवाद चल ही रहा था कि मुर्गे की बाँग सुनाई पड़ी। तभी दोनों ने अभिवादन कर एक दूसरे से विदा ली और वे अपने-अपने क्षेत्र में विलीन हो गये।

अभ्यास - कार्य

पढ़ो और समझो

निकटवर्ती	= पास के
मन्द	= धीमा
विवाद	= बहस
सुलभ	= आसानी से प्राप्त
आनन्दपूर्ण	= खुशी से भरा
दुर्लभ	= कठिनाई से प्राप्त होने वाला
पौष्टिक	= पुष्ट करने वाला
उपलब्ध	= प्राप्त

पंक्ति	=	कतार या लाइन
उत्पादन	=	पैदावार
चिकित्सा	=	इलाज
जटिल	=	उलझी हुई
निरन्तर	=	लगातार
वृद्धि	=	बढ़ोत्तरी
विलीन	=	गायब

सोचो और बताओ

(१) शहर अपने आपको बढ़कर क्यों समझता था ?

(२) गाँव ने शहर में सूर्य का प्रकाश तथा स्वच्छ खुली हवा मिलने में क्या कठिनाई बतायी ?

(३) किन वस्तुओं के मेल से हमारा भोजन पौष्टिक बन जाता है ?

(४) अब गाँवों में आने जाने की कौन सी सुविधाएँ बढ़ गयी हैं ?

(५) गाँवों में शिक्षा तथा स्वास्थ्य रक्षा की सुविधाओं के लिए सरकार ने क्या प्रयास किये हैं ?

(६) शहर में सामान खरीदने में लोगों को भीड़ का सामना क्यों करना पड़ता है ?

(७) गाँवों में जनसंख्या बढ़ने से कौन सी कठिनाइयाँ सामने आती हैं ?

(८) वायुमण्डल कैसे प्रदूषित हो जाता है ?

भाषा कार्य

(१) इन शब्दों को पढ़ो और लिखो :

सुखमय, आनन्दपूर्ण, मुहल्ला, निकटवर्ती, पौष्टिक, चिकित्सा, उत्पादन, निरन्तर, वृद्धि, पंक्ति, दुर्लभ।

(२) शब्द में 'ता' जोड़कर नया शब्द बनाओ:

उदाहरण :

सरल = सरलता

सुन्दर = ...

सुलभ = ...

स्वच्छ = ...

उदार = ...

(३) मूल शब्द लिखो

उदाहरण :

प्राथमिक = प्रथम

दैनिक = ...

सामाजिक = ...

साप्ताहिक = ...

वैज्ञानिक = ...

अध्यापन-संकेत

(१) चुने हुए छात्रों द्वारा बारी-बारी से गाँव और शहर के बीच हुए संवाद का अभिनय करायें।

(२) स्वस्थ और सुखी जीवन के बारे में नीचे दिये गये शब्दों का प्रयोग कर पाँच वाक्य लिखवाएँ:

स्वच्छ, पौष्टिक, शिक्षा, स्वच्छता, व्यायाम

पाठ-१७

मेरी अभिलाषा है

सूरज-सा दमकूँ मैं
चन्दा-सा चमकूँ मैं
झलमल-झलमल उज्ज्वल
तारों-सा दमकूँ मैं
मेरी अभिलाषा है।

फूलों-सा महकूँ मैं
विहगों सा चहकूँ मैं
गुंजित कर वन उपवन
कोयल-सा कुहकूँ मैं
मेरी अभिलाषा है।

नभ-जैसा निर्मल हूँ
शशि-जैसा शीतल हूँ
धरती-सा सहनशील
पर्वत-सा अविचल हूँ
मेरी अभिलाषा है।

मेघों-सा मिट जाऊँ
सागर-सा लहराऊँ
सेवा के पथ पर मैं
सुमनों-सा बिछ जाऊँ
मेरी अभिलाषा है

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास-कार्य

पढ़ो और समझो

उज्ज्वल	=	श्वेत, सफेद
अभिलाषा	=	इच्छा, लालसा
विहग	=	पक्षी
नभ	=	आकाश
निर्मल	=	स्वच्छ
शशि	=	चन्द्रमा
पर्वत	=	पहाड़
अविचल	=	अडिग
सुमन	=	फूल

सोचो और बताओ

(१) पहली चार पँक्तियों में बालक क्या-क्या इच्छाएँ प्रकट करता है ?

(२) तुम्हारी क्या अभिलाषा है ?

(३) बालक किसके समान सहनशील बनना चाहता है?

(४) कविता की कौन सी पंक्ति तुम्हें सबसे सुन्दर लगीं ? क्यों ?

भाषा-कार्य

१- रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-

. . . .

विहगों सा चहकूँ मैं

. . . .

कोयल सा कुहकूँ मैं

२- धरती सा . . . .

. . . . अविचल हूँ

३- नीचे लिखे शब्दों का एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखो-

सूरज . . . . . . मेघ . . . . . .

सागर . . . . चन्दा. . . . . .

४- नीचे लिखी पंक्तियों को सुलेख-पुस्तिका पर लिखो-

सेवा के पथ पर मैं

सुमनों सा बिछ जाऊँ।

अध्यापक-संकेत

कक्षा में बच्चों से सामूहिक पाठ करायें तथा कविता कंठस्थ कर कक्षा में सुनाने को कहें।

श्री देव सुमन

"भारत माता की जय! इन्कलाब जिन्दाबाद! अंग्रेजों भारत छोड़ो!" यह जय-घोष करते हुए स्त्री-पुरुष चले जा रहे थे। यह आज़ादी के दीवानों का जुलूस था। एक किशोर बालक उत्साह से भरा हुआ इनके पीछे-पीछे चलने लगा। वह हाथ की मुट्ठी ताने सबसे ऊँची आवाज में नारे लगा रहा था। अंग्रेज सिपाहियों ने जुलूस में शामिल अनेक लोगों को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया, पर इस किशोर बालक का क्या करते। यह तो बहुत कम उम्र का था, अतः इसे कुछ बेंत मारकर ही छोड़ दिया गया।

यही बालक श्री देव था।

ऊँचा कद, गोरा रंग, उल्लास की आभा से चमकता चेहरा। प्रसन्नता से मुस्कराते रहना, स्वच्छ वस्त्र यही छवि थी श्री देव की। वे कविता करते थे और सुमन उनका उपनाम था।

सुमन जी का जन्म हिमालय की तलहटी में स्थित टिहरी रियासत के एक छोटे से गाँव जोल में २५ मई सन् १९१५ को हुआ था। इनके पिता पं. हरिराम बडोनी वैद्य थे। माता का नाम तारा देवी था। सुमन जी के दो बड़े भाई थे और एक छोटी बहिन थी गायत्री जिसे वे बहुत प्यार करते थे।

सुमन तीन वर्ष के ही थे कि एक दिन हैजा पीड़ित लोगों की सेवा करते हुए इनके पिता स्वयं किसी रोग से ग्रस्त हो गये और चल बसे। इनकी माता ने धीरज न छोड़ा। गाँव के लोगों ने उन्हें अब बच्चों से पढ़ाई छुड़वाकर कुछ काम करवाने की सलाह दी परन्तु माँ ने कहा- नहीं। मैं अपने बच्चों की पढ़ाई नहीं छुड़ाऊँगी।

सुमन जी ने मिडिल कक्षा तक गाँव की पाठशाला में शिक्षा पायी, फिर वे आगे पढ़ने के लिए देहरादून चले गये। ऊपर लिखी हुई घटना देहरादून के विद्यार्थी जीवन की ही है।

देहरादून के बाद सुमन जी लाहौर गये। वहाँ उन्होंने एक कालेज में दाखिला लिया। यह वह समय था जब पूरे देश में अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई छिड़ी हुई थी। सुमन जी के दिल में अपने देश के लिए तड़प थी, वे भला कैसे पीछे रहते। लाहौर कालेज में पढ़ते समय इन्होंने कालेज में हड़ताल करा दी तो प्रिंसिपल ने

इन्हें कालेज से निकाल दिया। उन्हीं दिनों कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का मेला लगा। वहाँ सुमन जी को जन-सेवा का अवसर मिल गया। इन्होंने मेले में स्वयं सेवक बनकर लोगों की खूब सेवा की।

सुमन जी का कहना था कि हर हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा हिन्दी का पूरा ज्ञान होना चाहिए। इन्होंने हिन्दी की प्रभाकर और साहित्यरत्न परिक्षाएँ पास कर लीं। इसके बाद वे माँ से मिलने टिहरी गये। सुमन जी ने देखा कि टिहरी के लोग राजा की सेवा करते हुए गुलामों की सी जिन्दगी जी रहे हैं। न उनके बच्चों के लिए पर्याप्त स्कूल हैं, न लोगों के लिए अस्पताल। राजा के सिपाही जब चाहते किसी को पकड़ कर काम पर जोत देते, कभी मजदूरी देते और कभी नहीं।

सुमन जी ने सोचा कि पूरे देश की सेवा करने के साथ ही मुझे टिहरी निवासियों के लिए भी पहले कुछ करना चाहिए। इनके प्रयास से ''टिहरी प्रजा मंडल'' की स्थापना हुई, किन्तु राजा को जैसे ही पता लगा उसने सुमन जी के टिहरी राज्य में आनें पर रोक लगा दी। यहाँ तक कि उनको जेल में भी बन्द कर दिया गया। सुमन जी ने पूरे देश के लोगों को टिहरी की जनता की दशा के वारे में बताने का निश्चय किया।

जेल से छूटने पर सुमन जी भारत के कई शहरों में गये और देश के बड़े-बड़े नेताओं से मिले। इनमें गांधी जी, नेहरू जी आदि मुख्य थे। गढ़वाल से एक साप्ताहिक पत्र निकलता था ''कर्मभूमि'' जिसके सम्पादक थे श्री भैरवदत्त धूलिया। सुमन जी ने खूब लेख लिखे, कविताएँ लिखीं और देश के लोगों को टिहरी रियासत की जनता की दुख भरी स्थिति से परिचित कराया।

अब तो सुमन जी के टिहरी आने पर और भी सख्त रोक लग गयी। यहाँ तक कि जब वे अपने गाँव में रास्ता चलते तो एक या दो सिपाही कुछ फासले पर पीछे-पीछे चलते थे। उन पर हर समय कड़ी निगरानी रखी जाने लगी। सुमन जी ने इसका विरोध किया। उन्हें आदेश मिला कि वे टिहरी राज्य से बाहर चले जाय, नहीं तो जेल में बन्द कर दिया जायेगा। पर सुमन जी सच्चाई के रास्ते से हटने वाले न थे। उन्होंने जन-जागृति का काम जारी रखा। वे घूम-घूम कर लोगों को समझाते रहे कि पशु की तरह केवल खाना और सोना हीं हमारा जीवन नहीं है। हम मनुष्य हैं। हमें शिक्षित होना चाहिए।

राजा के कारिन्दों ने खूब-नमक मिर्च लगाकर उनके विरुद्ध राजा के कान भरे। परिणाम यह हुआ कि इन्हें फिर पकड़ कर जेल में ठूँस दिया गया। सुमन जी को जेल में तरह-तरह की यातनाएँ दी गयीं। कड़ाके की सर्दी में इन पर ठंडे पानी की बाल्टी डाली जातीं, इन्हें कोड़ों से पीटा जाता, खाने के लिए भूसी मिली आटे की रोटी

और कंकड़ मिली दाल दी जाती। पैंतीस सेर वजन की लोहे की हथकड़ी इनके हाथों में पहना दी गयी। दोनों पैरों में भी बेड़ी डाल दी गयी। किन्तु सुमन ने घुटने न टेके।

इस अत्याचार के विरोध में इन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया। दस दिन बीते। तीस-चालीस दिन से बढ़ते-बढ़ते अस्सी दिन बीत गये। सुमन जी ने अन्न का एक दाना भी नहीं लिया। उन्हें जबर्दस्ती दूध पिलाने की कोशिश की गयी और इंजेक्शन दिये गये। दवा इतनी गर्म थी कि इनके शरीर में जलन होने लगी और प्यास के मारे गला सूखने लगा। वे पानी पानी चिल्लाते रहे। वे रह-रह कर बेहोश हो जाते।

चौरासीवें दिन २५ जुलाई १९४४ की शाम को सुमन जी अपने देशवासियों की दशा तथा आदर्शों का स्मरण करते हुए सदा के लिए सो गये। उसी रात करीब बारह बजे जब आकाश में काले बादल छाये हुए थे तब सुमन जी की लाश उन्हीं के नीचे बिछे कम्बल में लपेटकर एक बोरी के अन्दर सिल दी गयी और चुपके से भागीरथी नदी की लहरों में फेंक दी गयी।

आजादी का वह सिपाही गंगा की गोद में सदा के लिए सो गया। सुमन कुचल दिया गया, किन्तु उसकी सुगन्ध देश भर में फैल गयी।

एक दिन वह भी आया जब हमारा देश अंग्रेजी शासन से मुक्त हुआ। टेहरी राज्य भी अत्याचारी राजा के शासन से मुक्त हुआ किन्तु आज भी टेहरी की मिट्टी में सुमन जी के बलिदान की सुगन्ध मौजूद है। टेहरी में स्थित सुमन चौक एवं सुमन पुस्तकालय उनकी याद दिलाते हैं।

प्रश्न और अभ्यास

पढ़ो और समझो

जय घोष	=	ऊँचे स्वर में जय बोलना
किशोर	=	ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की उम्र वाला लड़का
उल्लास	=	हर्ष, प्रसन्नता
तड़प	=	तीव्र इच्छा
पाबन्दी	=	रोक
शिक्षित	=	शिक्षा पाया हुआ
जन-जागृति	=	पूरी जनता में अपने अधिकारों का ज्ञान होना।
कारिन्दा	=	काम करने वाला या गुमाश्ता
यातना	=	पीड़ा, बहुत अधिक कष्ट
आमरण अनशन	=	किसी संकल्प के साथ आहार छोड़ देना, चाहे जान चली जाय।
चिर निद्रा की गोद में लीन होना	=	मर जाना

सोचो और बताओ

१- श्री देव सुमन को कुछ बेंत मारकर क्यों छोड़ दिया गया?

२- टेहरी में राजा के सिपाही प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करते थे?

३- सुमन जी के टेहरी आने पर क्यों रोक लगा दी गयी?

४- सुमन जी देश में घूम-घूम कर जनता को क्या समझाते थे?

५- जेल में सुमन जी को क्या कष्ट भोगने पड़े?

६- सुमन जी को लोग श्रद्धा के साथ क्यों याद करते हैं?

भाषा-कार्य

१. नीचे दिये गये शब्दों के विलोम लिखो:

शब्द	विलोम
दुख	. . . .
यश	. . . .
दण्ड	. . . .
समर्थन	. . . .

२. 'अत्याचारी' शब्द 'अत्याचार' से बना है। इसी प्रकार नीचे दिये गये शब्दों के मूल शब्द बताओ :

शब्द	मूल शब्द
सदाचारी	. . . .
स्वल्पाहारी	. . . .
शाकाहारी	. . . .

अध्यापन-संकेत

१. छात्रों को निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए वाक्य लिखने का निर्देश दें-

सिर पीट लेना, घुटने टेक देना, सदा के लिए सो जाना

२. सुमन जी के बारे में चार-पाँच वाक्य लिखने को कहें।

पाठ-१८

बिना विचारे जो करे

मोहन और सोहन दो मित्र थे और दोनों फुटबाल के अच्छे खिलाड़ी थे। फुटबाल एक बार उनके पास आ जाय तो फिर सीधे गोल पर ही जाती थी। मोहन-सोहन अपने विद्यालय की जान थे। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे और एक दूसरे के सुख-दुख में सदा साथ निभाते थे। दोनों का स्वभाव एक सा था, पर एक बात में दोनों एक दूसरे से अलग थे। मोहन सोच-विचार कर काम करता था, पर सोहन हर काम में शकुन-अपशकुन के फेर में पड़ जाता था। काम शुरू करने से पहले यदि पीछे से किसी ने छींक दिया तो वह इसे अपशकुन मान बैठता और अपना काम ठप कर देता।

एक बार विद्यालय में फुटबाल का मैच होने वाला था। इसके लिए खिलाड़ियों का चुनाव होना था। प्रिसिंपल साहब का आदेश था कि सुबह ठीक आठ बजे सब खिलाड़ी विद्यालय में एकत्र होंगे और खेल के अध्यापक दो टीमों के बीच मैच करायेंगे। अच्छा खेलने वालें को चुना जाएगा। इसके लिए कई दिनों से तैयारी भी चल रही थी। मोहन और सोहन ने भी खेल का खूब अभ्यास किया।

निश्चित दिन आ पहुँचा। सोहन सुबह होते ही उठा और तैयार होकर मोहन के घर की ओर चल पड़ा लेकिन यह क्या! वह घर से थोड़ी ही दूर पहुँचा था कि बिल्ली रास्ता काट गयी। सोहन ठिठक कर खड़ा हो गया और बोला-लो! यह तो बहुत बड़ा अपशकुन हो गया। अब तो मेरा चुनाव नहीं होगा! यह सोचकर वह लौट पड़ा।
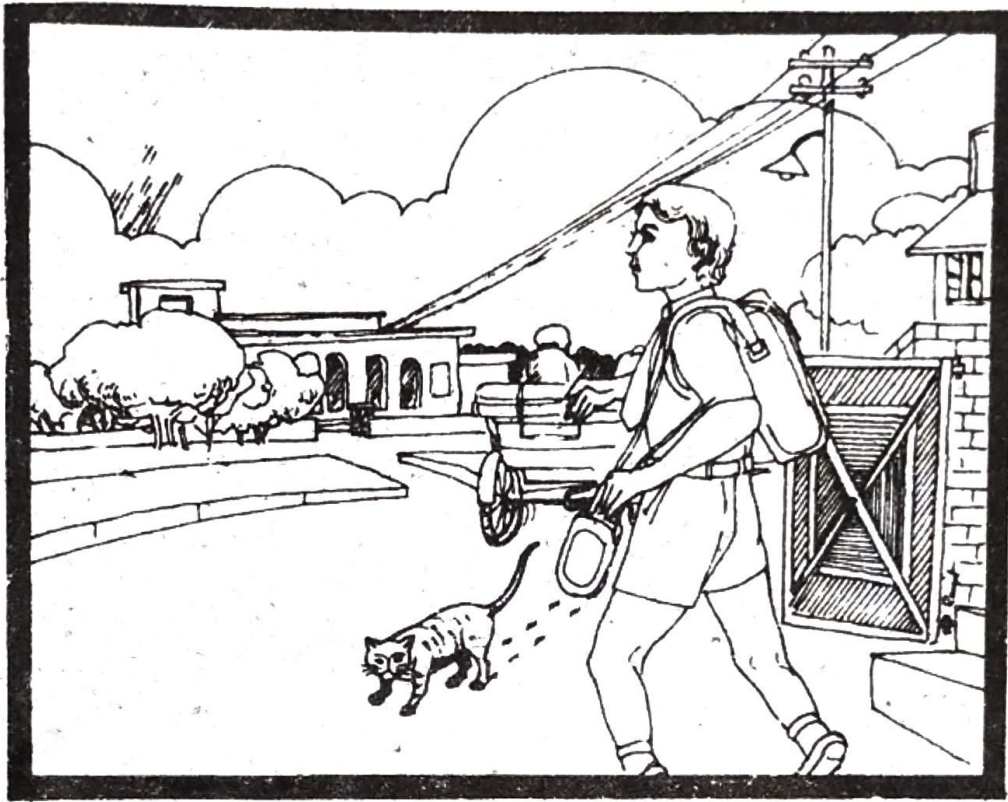
उधर मोहन बैचेनी से सोहन का इन्तजार कर रहा था। उसने बार-बार खिड़की से सड़क की ओर देखा पर सोहन कहीं दिखाई नहीं पड़ा। खेल के अध्यापक समय के बहुत पाबन्द थे। अत: मोहन चल पड़ा। उसके आगे चलने पर भी बिल्ली रास्ता काट गयी, पर वह मुस्करा कर आगे बढ़ गया। सभी लड़के मैदान में पहुँच गये। अध्यापक की सीटी बजते ही सभी खिलाड़ी दो पंक्तियों में खड़े हो गये। मोहन ने इधर-उधर नजर उठाकर देखा। सोहन का कहीं पता नहीं था। खेल शुरू हो गया, तभी सोहन दूर से आता दिखाई पड़ा पर अब क्या हो सकता था।

पूरे एक घंटे मैच चला और अन्त में खिलाड़ियों के नामों की सूची की घोषणा हुई, मोहन चुन लिया गया था। मोहन ने सोहन से देर में आने का कारण पूछा तो सोहन ने बताया, ''बिल्ली रास्ता

काट गयी थी'' ! यह सुनकर मोहन ने अपना सिर पीट लिया और कहा-तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है मित्र ! बिल्ली ने तुम्हारा रास्ता नहीं काटा था। तुम तो जानते हो सड़क के पार कल्लू की दुकान है। वह मछली बेचता है और सुबह-सुबह दुकान साफ करता है। बिल्ली वही मछली के टुकड़े खाने के लिए सड़क के पार गयी थी। वह रोज जाती है। उसने मेरा भी रास्ता काटा था, पर मैंने विचार किया तो यही समझ में आया कि यह तो बिल्ली की स्वाभाविक आदत है। उसका हमारे आने जाने से कुछ लेना-देना नहीं है। बात सोहन की समझ में आ गयी। पर अब क्या हो सकता था !

निश्चित समय पर मैच हुआ, मोहन के विद्यालय की टीम जीत गयी। बड़ी सी शील्ड विद्यालय को मिली। मोहन को अन्य खिलाड़ियों के साथ चाँदी का छोटा सा कप पुरस्कार में मिला। प्रधानाचार्य के साथ टीम की फोटो खींची गयी, जो कालेज की मैगजीन में छपी। वार्षिकोत्सव पर टीम को सबके सामने शाबाशी मिली।

मोहन सोच रहा था कि यदि मैं विचार कर काम करता और अपशकुन न मानता तो आज मैं भी उन खिलाड़ियों के साथ होता। अब उसकी समझ में आ गया कि सदा सोच-विचार कर काम करना चाहिए। शकुन-अपशकुन की धारणा से कार्य पूरा होने में बाधा पहुँचती है।

प्रश्न और अभ्यास

पढ़ो और समझो

शकुन	=	शुभसूचक संकेत
अपशकुन	=	अशुभसूचक संकेत

एकत्र होना	=	इकट्ठा होना
पंक्ति	=	कतार
सिर पीट लेना	=	क्रोध या दुख में सिर पर चोट करना
पुरस्कार	=	इनाम
वार्षिकोत्सव	=	वर्ष भर में होने वाला उत्सव

सोचो और बताओ

१. मोहन और सोहन विद्यालय की शान क्यों माने जाते थे ?

२. सोहन किस बात में मोहन से अलग था ?

३. बिल्ली के रास्ता काटने का सोहन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

४. सोहन को किस बात का पछतावा था ?

५. शकुन-अपशकुन मानने का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

भाषा कार्य

१. शब्द बनाओ

उदाहरण :

स्वभाव	=	स्वाभाविक
सप्ताह	=	. . . .
समाज	=	. . . .
समय	=	. . . .

२. जोड़कर नये शब्द बनाओ :

उदाहरण :

वार्षिक + उत्सव	=	वार्षिकोत्सव
सूर्य + उदय	=	. . . .
पर + उपकार	=	. . . .

समाज + उत्थान = ...

३. इस पाठ में अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्हें चुनकर लिखो।

अध्यापन-संकेत

छात्रों को निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण अभ्यास करायें।

अपशकुन, वार्षिकोत्सव, शाबाशी, पुरस्कार

४. वाक्यों में प्रयोग करो

स्वभाव, आदेश, इन्तजार, घोषणा, शाबाशी

पाठ-२०

वीर अभिमन्यु

''आप इस तरह सोच में क्यों बैठे हैं, महाराज ? युद्ध के क्या समाचार हैं? ''सोलह वर्ष के अभिमन्यु ने युधिष्ठिर के चरण छूकर पूछा।

''समाचार अच्छे नहीं हैं, बेटा! लेकिन तुम क्यों चिन्ता करते हो? हम लोग तो हैं ही।'' - युधिष्ठिर ने कहा।

''मुझे भी बताइए'' अभिमन्यु ने आग्रह किया।

युधिष्ठिर बोले- ''यह तो तुम जानते ही हो कि अभी तक हमारी जीत हो रही थी। कौरवों के बहुत से वीर मारे गये हैं। परन्तु आज जब अर्जुन यहाँ नहीं हैं, तब कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना की है

और हमें ललकारा है?"

"तो इसमें चिन्ता की क्या बात है?"- अभिमन्यु ने पूछा। युधिष्ठिर ने कहा, "तुम नहीं जानते कि चक्रव्यूह का तोड़ना कितना कठिन है। उसमें सेना को चक्करदार घेरे में खड़ा किया जाता है। व्यूह में सात द्वार होते हैं और हर एक द्वार को तोड़ने की एक विशेष विधि होती है। हममें से तुम्हारे पिता अर्जुन के अलावा और कोई चक्रव्यूह तोड़ना नहीं जानता। यदि हम कल चक्रव्यूह की लड़ाई में नहीं जाते तो हमारी हार मानी जायगी।"

"आप चिन्ता न करें। मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा दें, मैं चक्रव्यूह तोड़ दूँगा।" - अभिमन्यु ने कहा।

युधिष्ठिर बोले - "तुम यह क्या कह रहे हो? तुमने चक्रव्यूह तोड़ने की विद्या कब सीखी?

अभिमन्यु ने उत्तर दिया, "महाराज एक बार पिता जी ने माँ से चक्रव्यूह तोड़ने का वर्णन किया था। उस समय मैं माँ के पेट में था और मैंने यह वर्णन सुना। तभी से मैं यह विद्या जानता हूँ, केवल व्यूह से निकलना नहीं जानता, क्योंकि जब अन्तिम द्वार तोड़ने का वर्णन आया तभी माँ को नींद आ गयी और पिताजी ने वर्णन बन्द कर दिया।"

"अन्तिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा", भीम ने गदा हिलाते हुए गरजकर कहा।

युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा - "लेकिन तुम अभी बालक हो, हम तुम्हें लड़ाई में कैसे भेज सकते हैं?"

अभिमन्यु ने कहा – "महाराज, मैं भी वीर पुत्र हूँ। शत्रु ललकारे और मैं बैठा रहूँ। यह कैसे हो सकता है?"

युधिष्ठिर करते ही क्या! उन्होंने अभिमन्यु को युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी।

चक्रव्यूह के द्वार पर गुरु द्रोणाचार्य खड़े थे। अभिमन्यु ने दूर से ही उनके चरणों में बाण छोड़कर प्रणाम किया। द्रोणाचार्य समझ गये कि यह अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु ही है। बाणों की बौछार करता हुआ अभिमन्यु व्यूह के भीतर घुस गया। उसके पीछे भीम और दूसरे पाण्डव वीर थे। भीम ने द्रोणाचार्य के रथ को उठाकर घोड़ों समेत आकाश में फेंक दिया और व्यूह में घुस गये।

व्यूह के अगले द्वार पर जयद्रथ था। अभिमन्यु का उससे घोर युद्ध हुआ। उसे हराकर अभिमन्यु भीतर घुस गया, परन्तु भीम और दूसरे पाण्डवों को जयद्रथ ने व्यूह के भीतर न जाने दिया। अभिमन्यु अकेला पड़ गया, लेकिन अकेले ही वह सबसे युद्ध करता रहा। उसके बाणों की वर्षा से कौरवों की सेना के हाथी, घोड़े पैदल सब गिरने लगे। वह जिधर भी मुड़ जाता उधर मैदान साफ हो जाता।

अभिमन्यु की वीरता देखकर कौरवों में खलबली मच गयी। दुर्योधन ने जब देखा कि चक्रव्यूह का अन्तिम द्वार टूटने ही वाला है तो उसने अपने सात महारथियों को ललकार कर कहा, "आप देखते क्या हैं? एक साथ मिलकर इसे क्यों नहीं मार डालते?" यह सुनते ही सातो महारथियों ने उसे घेर लिया और वे उस पर चारों ओर से बाणों की वर्षा करने लगे।

किन्तु कहाँ वह एक और कहाँ सात महारथी! उसका सारथी मार डाला गया। धनुष भी काट दिया गया। जब उसके पास कोई हथियार न रहा तो वह रथ के पहिये को ही हाथ में लेकर शत्रुओं पर झपटा। लेकिन उसका पहिया भी काट डाला गया वह निहत्था हो गया और बाणों से उसका शरीर छलनी हो गया।

अभिमन्यु ने शत्रुओं को धिक्कारा और द्रोणाचार्य की ओर मुड़कर कहा, "गुरुवर! आपके रहते हुए यह कैसी लड़ाई हो रही है जिसमें निहत्थे पर वार होता है। आप क्यों नहीं बोलते?"

द्रोणाचार्य कुछ कह न सके। उनका सिर नीचा हो गया। इतने में दुःशासन के पुत्र ने पीछे से अभिमन्यु के सिर पर गदा मार दी। वह वीर धरती पर गिर पड़ा और फिर कभी न उठा।

युद्ध में अभिमन्यु को वीरगति प्राप्त हुई। अपने साहस और शौर्य

के कारण वह सदा के लिए अमर हो गया। सात महारथियों से घिर जाने पर भी वह विचलित नहीं हुआ और अकेले उनसे युद्ध करता रहा। उसकी वीरता की कहानी आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करती है।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

अन्तिम	=	आखिरी
आकाश	=	आसमान
सारथी	=	रथ हाँकने वाला
निहत्था	=	जिसके हाथ में कोई अस्त्र-शस्त्र न हो
शौर्य	=	वीरता
वीरगति प्राप्त होना	=	युद्ध में मारा जाना

सोचो और बताओ

(१) पाण्डवों और कौरवों का युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है?

(२) युधिष्ठिर की चिन्ता का क्या कारण था?

(३) बालक अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में क्या वीरता दिखायी?

(४) अभिमन्यु के सिर पर किसने गदा मारी?

(५) अभिमन्यु के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

भाषा कार्य

१- वाक्य में प्रयोग करो-

बाणों की बौछार करना, खलबली मचना, निहत्था होना, सिर नीचा होना, खुशी का ठिकाना न होना।

२- सुलेख का अभ्यास करो-

"आप चिन्ता न करें। मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा दें, मैं चक्रव्यूह तोड़ दूँगा।"

३- युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा - "लेकिन तुम अभी बालक हो, हम तुम्हें लड़ाई में कैसे भेज सकते हैं?"

इस वाक्य में अभिमन्यु (नाम) की जगह पर "तुम" और "तुम्हें" का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार युधिष्ठिर की जगह "हम" का प्रयोग किया गया है।

तुम, तुम्हे और हम शब्द सर्वनाम हैं। किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द को "सर्वनाम" कहते हैं, जैसे - मैं, तुम, हम, आप, मेरा, तुम्हारा, आपका, उसका, उसे आदि।

- पाठ में से ऐसे आठ शब्द चुनो और बताओ कि उनका प्रयोग किस नाम के लिए हुआ है। जैसे - आप = युधिष्ठिर।

४- उच्चारण करो-

युधिष्ठिर, अभिमन्यु, चक्रव्यूह, व्यूह।

५-समान अर्थ वाले शब्द बताओ

कठिन	-	आकाश	-
युद्ध	-	शत्रु	-
अलावा	-	धरती	-
आज्ञा	-	शाम	-
बाण	-	प्रण	-

अध्यापन-संकेत

बच्चों से पाठ का अभिनय कराएँ।

फूल और काँटा

हैं जनम लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।

मेह उन पर है बरसता एक सा,
एक सी उन पर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वस्त्र-तन
प्यार डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन।

फूल लेकर तितिलयों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अभ्यास - कार्य

पढ़ो और समझो :

अनूठा	=	अनोखा
सदा	=	हमेशा
श्याम	=	काला
सुर	=	देवता
कुल	=	परिवार
कसर	=	कमी
जी की कली खिलाना	=	मन को खुश कर देना
आँख में खटकना	=	बुरा लगना

सोचो और बताओ :

(१) फूल हमारे लिए क्या करता है?

(२) फूल और काँटे के स्वभाव में क्या अन्तर है?

(३) काँटा लोगों को क्यों खटकता रहता है?

(४) "है सदा देता कली जी की खिला।" का क्या भाव है?

भाषा-कार्य :

१- नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा करो-

फूल लेकर . . . .

. . . . अपना अनूठा रस पिला

निज सुगन्धों और . . . .

. . . . .कली जी की खिला।

२- कौन क्या करता है, छाँटकर लिखो-

उंगलियों में चुभता है।

तितलियों के पर कतर देता है।

भौरों को मीठा रस पिलाता है।

सुगन्ध से मन को प्रसन्न कर देता है।

सबकी आँख में खटकता है।

भौरों को बेध देता है।

देवताओं के मस्तक पर चढ़ाया जाता है।

फूल	काँटा
जैसे-भौरों को मीठा रस पिलाता है।	उँगलियों में चुभता है।

३- अर्थ लिखो-

१- है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर

२- मेह उन पर है बरसता एक-सा
एक सी उन पर हवाएँ हैं बही।

३- किस तरह कुल की बड़ाई काम दे।
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

अध्यापन-संकेत :

कविता का सामूहिक सस्वर पाठ करायें तथा छात्रों को कविता कंठस्थ करायें।

पाठ-२२

एक 'बुलबुल' की डायरी

४ नवम्बर १९८८

आज से मैंने डायरी लिखनी शुरू की है। पिताजी ने मेरे जन्मदिन पर मुझे यह डायरी दी है। उन्होंने कहा है कि मैं इस पर अपनी दिनचर्या लिखा करूँ। पिता जी से यह डायरी पाकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैंने सोचा कि आज से ही डायरी लिखना प्रारम्भ कर दूँ।

आज का दिन सचमुच बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मैंने आज ही 'बुलबुल' की दीक्षा ली है। भैया जब 'स्काउट' की नीली वर्दी और स्कार्फ पहन कर जाता था तब मैं सोचा करती थी कि मैं कब गाइड बनूँगी और गाइड की नीली पोशाक पहनूँगी। आज वह अवसर मुझे मिल गया है। छोटी बालिकाओं को 'बुलबुल' ही बनना पड़ता है। इसी तरह छोटे बालक 'कब' या 'बालवीर' बनते हैं।

का सप्रमाण वर्णन किया गया है। उन्होंने सिद्ध किया कि पौधों में भी चेतना होती है। उनका पेरिस में एक महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ जिसमें उन्होंने जन्तुओं तथा वनस्पति में समानता प्रदर्शित की। विदेशों में उनकी खोज का बड़ा सम्मान हुआ। फिर तो वे अनेक देशों में बुलाये गये। अमरीका, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया, जापान आदि देशों में उन्होंने अपनी खोज पर भाषण दिये।

प्रेसीडेंसी कालेज में सेवा करते हुए उन्होंने सत्तावन वर्ष की अवस्था में वहाँ से अवकाश ग्रहण किया। उन्होंने पाँच लाख रुपये लगाकर ''बसु विज्ञान-मन्दिर'' की स्थापना की। रवीन्द्र नाथ टैगोर, रोम्या रोलाँ तथा स्वामी विवेकानन्द उनके प्रशंसकों में से थे। बसु ने अपनी वसीयत में ''बसु विज्ञान-मन्दिर' को सत्रह लाख रुपये दिये।

जगदीश चन्द्र बसु विश्व के महान वैज्ञानिकों में से एक थे। वे आजीवन तन-मन-धन से विज्ञान की सेवा में लगे रहे। वे स्वयं नि:सन्तान थे किन्तु अपने शिष्यों से पुत्रवत् प्यार करते थे। उन्नासी वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ।

अभ्यास कार्य

पढ़ो और समझो

प्राकृतिक	=	प्रकृति सम्बन्धी
सम्पर्क	=	साथ
स्नायु प्रणाली	=	नाड़ी तन्त्र
वसीयत	=	मृत्यु के बाद सम्पत्ति के अधिकार के लिए लिखित आदेश।

विभाजन	=	बँटवारा
सौन्दर्य	=	सुन्दरता
आकर्षण	=	खिंचाव
स्नेहपूर्ण	=	प्रेमपूर्ण
निरन्तर	=	लगातार, सतत्
शोध	=	खोज
सप्रमाण	=	प्रमाण सहित
आजीवन	=	जीवन भर
नि: सन्तान	=	बिना सन्तान के
पुत्रवत्	=	पुत्र के समान

सोचो और बताओ

(१) जगदीश चन्द्र बसु किस बात की जानकारी कराने वाले प्रथम वैज्ञानिक थे।

(२) लन्दन में बड़े वैज्ञानिकों से सम्पर्क होने पर बसु को क्या लाभ हुआ ?

(३) वनस्पति सम्बन्धी अपने ग्रन्थ में बसु ने क्या प्रमाणित किया है ?

(४) किन देशों में बसु ने अपनी खोजों के कारण सम्मान प्राप्त किया ?

(५) बसु जीवन भर किस कार्य में लगे रहे ?

(६) अपने शिष्यों के साथ बसु कैसा व्यवहार करते थे ?

भाषा कार्य

(१) इन शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग करें

सम्पर्क, प्रारम्भिक, वैज्ञानिक, आकर्षण, आजीवन

(२) शब्द बनाओ -

उदाहरण :

देह + अवसान = देहावसान

ग्रीष्म + अवकाश = ...

अनाथ + आलय = ...

सुख + आसन = ...

(३) शब्द बनाओ -

उदाहरण :

प्रारम्भ	प्रारम्भिक
सप्ताह	....
समाज	....
समय	......

अध्यापन-संकेत

(१) निम्नलिखित शब्दों को बोलकर छात्रों से लिखवाइए-
प्राकृतिक, स्नायु प्रणाली, सौन्दर्य, आकर्षण, स्नेहपूर्ण, सप्रमाण, निःसन्तान, पुत्रवत् , देहावसान

(२) छात्रों को जगदीश चन्द्र बसु के बारे में पाँच वाक्य लिखने का निर्देश दें।

पाठ-२८

ओणम

ओणम केरल राज्य का प्रमुख त्यौहार है। केरल हमारे देश के दक्षिणी भाग में स्थित है। वहाँ के निवासी यह त्योहार सावन के महीने में मनाते हैं। मलयालम भाषा में सावन माह को 'चिंगमासम' कहते हैं।

ओणम खुशहाली और उल्लास का पर्व है। यह लगातार पाँच दिन तक चलता रहता है। इसका दूसरा दिन सबसे महत्त्वपूर्ण है, इसे 'तिरुओणम' कहते हैं। पहले दिन लोग घर की पुताई और आस-पास की सफाई करते हैं। उसके बाद हर घर का आँगन 'पूक्कलम' से सजाया जाता है। पूक्कलम रंग-बिरंगे फूलों से बनायी गयी सुन्दर गोलाकार आकृति को कहते हैं। फूलों की यह सुन्दर सजावट बालक-बालिकाएँ और स्त्रियाँ मिल-जुलकर करती है। पूक्कलम के पास दीप रखकर लोग देवता की पूजा करते हैं।

ओणम पारिवारिक मिलन और आपसी सहयोग का त्योहार है। केरल के लोग जहाँ भी जाते हैं, वे तिरुओणम के दिन घर लौट आते हैं और परिवार के साथ हिल मिलकर रहते हैं। उस दिन सभी लोग नये और साफ-सुथरे कपड़े पहनते हैं। दोपहर के समय सभी लोग एक साथ बैठकर केले के पत्ते पर भोजन करते हैं। केले के पत्ते पर भोजन करना लोग बहुत पवित्र मानते हैं।

ओणम के दिन भोजन में तरह-तरह के पकवान बनाये जाते हैं। इनमें मुख्यतः चावल, दाल पापड़, साँभर, खिचड़ी, उप्पेरी (पकौड़ी),

पायसम आदि बनाते हैं। केरल में मुख्य रूप से धान, नारियल और केले की खेती होती है। भोजन के सभी सामान इनसे ही तैयार किये जाते हैं।

ओणम के दिन लोग तरह-तरह के खेल खेलते हैं। बालिकाएँ और स्त्रियाँ ताली बजाते हुए नृत्य करती हैं। इसे कैकोट्टिकली नृत्य कहते हैं। गाँव और नगर में मनोरंजन के लिए खेलकूद की प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। नदियों और समुद्र के किनारे रहने वाले लोग नौका दौड़ भी करते हैं। नौका दौड़ खेल बड़ा ही मनोरम होता है। इसे देखने के लि दूर-दूर से लोग चले आते हैं। इसी समय 'नेहरू ट्राफी' नौका दौड़ प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है। नौका-दौड़ की यह सबसे बड़ी प्रतियोगिता है।
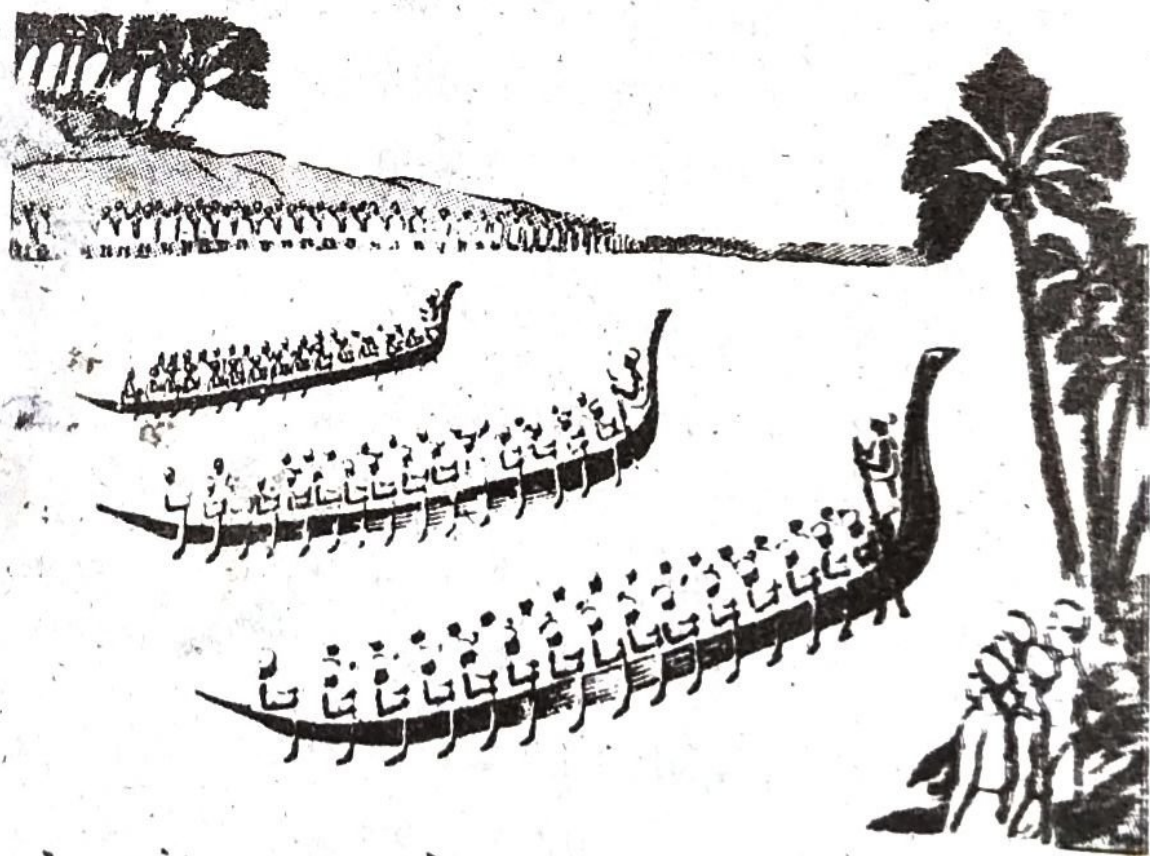
ओणम के अवसर पर केरल में पर्यटकों की भीड़ लग जाती है।

केरल की राजधानी तिरुअनन्तपुरम की चहल-पहल तो देखते ही बनती है।

ओणम त्योहार मनाने के सम्बन्ध में एक कहानी प्रचलित है। कहा जाता है कि यह रंगीला त्योहार राजा महाबली के सत्कार में मनाया जाता है। महाबली बहुत शक्तिशाली राजा था। उसकी राजधानी महाबलीपुरम् थी। वह पृथ्वी, आकाश और पाताल तीनों पर राज्य करता था। देवता महाबली के शासन को पसन्द नहीं करते थे। उन्हें भय था कि कहीं इन्द्र का सिंहासन भी न छिन जाय। देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की - भगवन, हमें महाबली के शासन से मुक्त करें।

महाबली को हराना आसान नहीं था। भगवान विष्णु को एक उपाय सूझा। उन्होंने वामन का रूप धारणकर राजा के द्वार पर भिक्षा के लिए आवाज लगायी। महाबली महान दानी और दयालु था। उसने वामन को मुँहमाँगी वस्तु देने का वचन दिया। वामन ने तपस्या करने के लिए केवल तीन पग भूमि माँगी। महाबली ने उन्हें तीन पग भूमि कहीं भी नाप लेने को कह दिया।

विष्णु ने अब विराट रूप धारण कर लिया। उन्होंने तीन पग में धरती, आकाश और पाताल को नाप लिया। महाबली ने अब विष्णु के सामने अपना सिर झुका दिया। विष्णु ने महाबली को राज्य करने के लिए पाताल लोक में जाने को कह दिया।

महाबली अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था। प्रजा की भलाई के लिए उसने अनेक कार्य किये थे। वह प्रजा को अपनी सन्

भाषा कार्य :

(१) अर्थ बताओ

- परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
- तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
- उस मातृभूमि की धूल में हम पूरे सन जायेंगे।

(२) नीचे लिखे शब्दों के एक-एक समानार्थी शव्द लिखो

मातृभूमि, पूर्वज, रज, भव, हर्ष

(३) उच्चारण करो-

बाल्यकाल, मातृभूमि, मग्न, हर्षयुक्त,प्रत्युपकार,सुरस

(४) मातृभूमि से सम्बन्धित कोई कविता सुनाओ

अध्यापन संकेत

परम हंस,प्रत्युपकार, सुरस-सार, भव बन्धन मुक्त आदि शब्दों को स्पष्ट करें और कविता छात्रों को कंठस्थ करायें।

राष्ट्र-गान
जनगणमन-अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जयगाथा ।
जनगण-मंगलदायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।

प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग-जीवन सफल बना जावें।

हम दीन-दुखी, निबलों-विकलों के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जावें।।

छल दंभ-द्वेष-पाखण्ड-झूठ-अन्याय से निशि दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।

निज आन-बान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।।